कवित्त ॥ सुभर उतरि सतनंज । चंद पट्टौ कंगुरह ॥
लै आयौ जालंध । राइ हाहुलि हंमीरह ॥
अरु जाल पाप रसि परस । परस दरसत दुह अप्पौ ॥
आदि जुद्ध दय दीन । सिंघ पष्षरि किन दिष्यौ ॥
इम नमसकार करि पुच्छयौ । अरु पुच्छमौ पंछजो बिगति ॥
हुं कहौं सुतुम जानहु सकल । चलहु चंद अग्गे निरति ॥
छं० ॥ ६७० ॥

कवि चन्द का जालंधर गढ़ जाना और हम्मीर को समझाना।

सुरिल्ला ॥ मग्गह चलंत नहि करि बिरम्म । सामंत स्यैर सुभर मुदित्त तम्म॥
जालंध जाहु नृप पति सुकाज । राषहु तराज प्रथिराज आज ॥
॥ छं० ॥ ६७१ ॥

कवित्त ॥ कह्यौ चंद बरदाई । बत्त हाहुलि हम्मीरह ॥
स्वामि ध्रम्म चिंतियै । दोस टारियै सरीरह ॥
बहुआमा दौ राज । धान जंबू ग्रह लग्गौ ॥
बोल वंक तजि कंक । साम ध्रम्मह पथ जग्गौ
जंमन मरंन भंजन भिरन । जंत रीति सह जानियो ॥
कंगुरह राइ बत्तं अचल । भई बचन परमानियो ॥
॥ छं० ॥ ६७२ ॥

चलत मग्ग दुह मंगि । राजा तव लगि इति धीरह ॥
लै आउं जालंध । राइ हाहुलि हंमीरह ॥
नदि बिषाह उत्तरिग । जाय कंगुर सपन्नो ॥
पंच सत्त पंच पेडि । आय अग्गौ होइ लिन्नौ ॥
भोजन भगति बहु भांति किय । सब पुच्छिय राजन बिगति ॥
जालंध राइ जंबू धनि । सुनि हमीर चंदह सुमति ॥
छं० ॥ ६७३ ॥

प्रथम बाह असनान । अष्ट भुज देवि परसनस्सौं ॥
तहं सुदेह रा ग्राम । बान गंगा अब दरसौं ॥

गए पाप जनमंत। भेंट कंगुर गढ़ रानी ॥
ओप मिले हम्मीर। सामि अम्मह सहि नानी ॥
तुम कहि जुहार सामंत सब। अरु राजन बहु हेत धरि ॥
इन वार तुम्म हम्मीर नृप। सजौ सेन सुरतान परि ॥

छं० ॥ ६७४ ॥

दूहा ॥ मुष मिट्टी रुट्ठी सुजी। हाहुलि राव नरिंद ॥
बोल बंक सो कंक करि। जंपि सु मुष जै चंद ॥

छं० ॥ ६७५ ॥

कवि चन्द का हम्मीर से सब हाल सुनकर कहना कि इस समय पृथ्वीराज का साथ दो।

कुंडलिया ॥ ढिल्ली वै है गै दिसा। ता राजन लगि भीर ॥
हो तौते रन आतुरह। चढ़ि हैवर हम्मीर ॥
चढ़ि हैवर हम्मीर। साहि नदि सिंधु समुक्की ॥
राह रोंस गोरी नरिंद। चहुआन सरुक्की(१) ॥
मग्ग मग्ग अकलंक। कित्ति बोहिथ चलाई ॥
तौ लागो संग्राम। भार अप्पौ ढिल्लाई ॥

छं० ॥ ६७६ ॥

दूहा ॥ कै कारन भौ वै दिसा। चढ़ि ढिल्ली वै भद्द ॥
बंक बिसाहन भरह घी। लै लाहौरी हद्द ॥

छं० ॥ ६७७ ॥

कबित्त ॥ इन लाहौरी हद्द। कंक करि बैर बिसाही ॥
इन लाहौरी हद्द। बीर व्यापार बसाही ॥
इन लाहौरी हद्द। मूल बिन व्याज साहि लिय ॥
इन लाहौरी हद्द। बाल चहुआन सत्य किय ॥
लाहौर हद्द अजह्ल सकल। करहि जग्य व्योपार बर ॥
हाहुलि हमीर दो पन्न बचि। करौं धरद्धर साहि बर ॥

छं० ॥ ६७८ ॥

(१) मो०—मान चहआंवनहं रुक्की।

बीरां बंकस कंक। केलि संभलि रा गोरी॥
वे उन्हाँ उन्हां कहै। पंचौ नद मेरी॥
जुड्ढानी बज्जागि। लागि बीरां उन्हाई॥
हो हम्मीर नरिंद। चंद जायो न बुझाई॥
पगधार ध्रम्म पची तनौ। चूकै न्नक निवासियै॥
जै काम स्वर साधन चलै। धूधु मंडल वासियै॥

छं० ॥ ६७९ ॥

हम्मीर बचनं।

के दीहां[1] लगि केलि। करी कांहे लगि झुझ्झौ॥
हट गरुहां सों लागि। जाइ कौरव[2] कुल बुझ्झौ॥
हो हमीर हम्मीर। चंद बत्तां करि दिष्षौ॥
जो पंचानदि पंच देस। अड्ढा अर्ध नष्षौ॥
कहियै न सुष्ष नर लोक को। किं सुर लोक सुहाइयां॥
मिष्टान पान भामिनि भवन। पुच्छो तोहि कहाइयां॥

छं० ॥ ६८० ॥

कविचन्द बचनं।

ध्रिग्ग सुष्ष संसार। ध्रिग्ग मिष्ठान पान बर॥
सुपन में ईषह पत्त। मिट्ठ लग्गै हाहुलि पर।
न्नक संधि में परै। क्रम्म घर बंध भार गिर॥
कातर मन छंडियै। जीह सल बंधै दुड्डर॥
सुर लोकहु नर न्नकपन। जस अपजस बंधी रवन॥
मो बुझि झुझ्झि पच्छै मरौ। जानि बक ग्रह मुगति पनु॥

छं० ॥ ६८१ ॥

हम्मीर वचन।

कहि हमीर सुनि चंद। नाम तुम चंद न्याय धरि॥
कहौ मंच कुल वद्द। कबहु उतरै न संभरि॥
राज नीति जानहु न। साहि दिष्षौ दल अप्पन॥
गरुहां करि मरिहौ जु। बिरद लभ्भौ उर कंपन॥

(१) ए० कृ० को०—हीहां। (२) ए० कृ० को०—कोरों।

जद्यपि सुभोन उत्तर तपै । जदपि संझ चंपिय गहन ॥
चहुआन अंग ते दिन नहौ । गहन राज ते रिपु रहन ॥
छं० ॥ ६८२ ॥

कविचन्द वचन ।

मुनि हम्मीर नरिंद । बिधिनि बंधे बंधन वर ॥
डोरी मन निम्मान । काल षंचौ निकट कर ॥
प्रय लग्गोनिय मींच । मंत कौ करै जियन कौ ॥
बिधि विधान निम्मान । झूठ उच्चार कियन कौ ॥
गल्हां न संच संचै ननह । सो मैं रहै गल्हां रहै ॥
उच्चरै चंद जंबू धनी । साच एक जुग जुग चहै ॥
छं० ॥ ६८३ ॥

हम्मीर वचन ।

कहि हमीर सुनि चंद । हुआ दिन अदिन बिचारौ ॥
अवै रावण हरि सीत । कियौ गढ लंक संघारौ ॥
अदिन कांज पंडवनि । जूआ सौं हेत बिचारौ ॥
अदिन काज परिछत्त । रिष्य गल अप्प हकारौ ॥
इह अदिन बुद्धि सामंत सब । कलह केलि अति बल सरिय ॥
हरि हरा देख इंद्रादि सुर । वरजि गये अति गति बुरिय ॥
छं० ॥ ६८४ ॥

मिटै न बर संबंध । इता अनयो क्यों सहिय ॥
चंद बिंब चहुआन । भूमि भारह निब्बहियै ॥
जैत सुभर बलिभद्र । बीर बंधन सुविहानै ॥
बड़ गुज्जर रा राम । झूठ बंधे बर बानं ॥
बीरंम भग्ग मन जिहि बरनि । नर बरनि तिहि सोइ नर ॥
जानियै न मन छिज सबर सुगति । यो धर बंध पूरंन कर ॥
छं० ॥ ६८५ ॥

कविचन्द वचन ।

चंद कहै हम्मीर । अनग पंची क्यों आवै ॥

(१) ए० कृ० को०—मोन । (२) मो० रहै । (३) ए० कृ० को०—मुगाति ।

जबहि समर संपजै। तबहि अंबर सिर लावै।
जहां रुध्यों तहां मरै। घाट अवघट न बिचारै।
जस लज्जा गल बंधि। स्वामि भ्रम्मह उद्धारै॥
संसार अथिर सामंत मत। सक सहाव बंधन भिरिन॥
जानहि पराक्रम पुच्छ तम। इन अग्गें को तर करन॥
छं०॥ ६८६॥

हम्मीर बचन।

काली कल बिष धरै। डंक बीछी उच्छारै॥
नीलकंठ सिव वरै। मोर महोरंग निहारै॥
काल अंब ढरि जाहि। जीह पप्पीह पुकारै॥
धप्पै बहै गयंद। चढै शिकार सिआरै॥
सुरतान काम सद्धै सलष। जैत रांइ बिरदां बहै॥
हाहुलि राइ भट्टै कहै। को अनंघ इत्तै सहै॥ छं०॥ ६८७॥
दावानल पांवार। अनल चहुंआन सहाई॥
घटजनमा रिषिराज। समद सोषै धरताई॥
जैत राव कंठीर। हथ्थ सामंत राज सिर।
पहु पहार पांवार। घडै भंजै गोरी धर॥
अब्बुआ राव अग्गै पहर। बिन न जोर जंबू रहै॥
चुंगलिय बाज जोगिनि पुरिय। जं जं भावै तं कहै॥
छं०॥ ६८८॥

कविचन्द बचन।

सुन हम्मीर नरिंद। मरन आवै अभाग मति॥
अंत काल बिक्कम नरिंद। भष्यि वायस अविद्धि गति॥
मरन वार वर भोज। धूम्म मुक्क मलेच्छ भौ॥
मरन काल पंडवन। ग्यान छुट्टौ मोहि लभ्भौ॥
चिंतौ न चिंत चिंतह नहौ। नरक निवासी होहि नर॥
धिग धिग सुबीर बसुधा करै। तौ न छुट्टै नर काल भर॥
छं०॥ ६८९॥

हम्मीर वचन।

सुनौ भट्ट कविचंद। रहसि बुल्ल्यौ जंबू पति॥
मो जिय इय अंदेस। मंत पुच्छौं जालंधर गति॥
उभै लिषें कागद प्रमान। राज राजन सुलितानं॥
बीय अग्गै मुक्किय़ें। सोइ अप्पै फुरमानं॥
बत्ती विवेक द्रुग्गा सुपत। हथ समप्पि हम्मीर कर॥
आरंभ होइ इह बत्त गति। सुबर बीर जंपौ सुबर॥

छं० ॥ ६९० ॥

कविचन्द बचन।

असत राज जब ग्रहै। नीति भ्रम दूरि बिडारै॥
सती असत जब ग्रहै। पैसि भांडै भंडारै॥
जती असत जब ग्रहै। कनक कामिनि मन मंडै॥
सूर असत जब ग्रहै। मरन माया तन मंडै॥
हो अबुधि न करि जंबू धनी। इह सुबुद्धि कौ पुच्छियै॥
जालंध देवि गम अगम बुधि। सो बुधि पुच्छन इच्छियै॥

छं० ॥ ६९१ ॥

हम्मीर वचन।

कुंडलिया॥ मगि वायस जग्गिय अलुक। पषि परवार कपोत॥
भौम नहीं बंधाइ बंध। धरक न मानै जोत॥
धरक न मानै जोति। धरक मुक्कै न धरद्धर॥
धर मुक्कै मुक्कहि न मान। सिंघ सा पुरिस बाज बर॥
ऐव दिसित चढि चरौं। चंद जन मांतहि मग्गं॥
कौ अनंप इह सहै। कहै सामंत सुर मग्गं॥

छं० ॥ ६९२ ॥

कविचन्द बचन।

कवित्त॥ सोइ ज सूर सा भ्रम्म। जुग्ग सा भ्रम्म न पुच्छै॥
दया दान दम तित्थ। सबै सा भ्रम मनि रुभ्भै॥

सांमि ध्रम्म बर मुगति। नरक बर तिथ्य निवासौ॥
सुनि हमीर सा ध्रम्म। करै सुरपुर नर बासौ॥
सा ध्रम्म मुकति बंधै रवन। सांमि ध्रम्म जस मुगति वर॥
अब किति किति करतार कर। नरक चूक भ्रुभ्रभौति नर॥
छं०॥ ६९३॥

हम्मीर बचन।

अबूरा पांवार। जैत हाहुलि कहि बुझै॥
सुनि कन्हां चहुआन। ताहि प्रथिराज न पझै॥
पूछानी चामंड। डंड मंगै लाहौरी॥
जिम खाना गंधान। कोल लहौं कारोरी॥
उच्चार भार बोलै हरै। राज उलग्यौ साहनी॥
उपरैं जांम अद्दों लगर। सुभर उभारै बाहनी॥
छं०॥ ६९४॥

कविचन्द बचन।

इन वेरां हम्मीर। नहीं औगुन बंचीजै॥
इन वेरां हम्मीर। छत्ति ध्रम्मह संची जे॥
इन वेरां कै सिंघ। बर विषर जेम उभारै॥
इहि वेरां हम्मीर। स्लर क्यों स्यार संभारै॥
वेरां हमीर पौरुष पकरि। इह सु बात रंडां ररी॥
सामंत राज काजह समय। न करि ढील निंदा करी॥
छं०॥ ६९५॥

हम्मीर बचन।

की लोहानै जंग। साम लग्गा अजमेरी॥
कै भासें उच्छेरि। तुरी तूंवर विच्छेरी॥
जेती ताखभांमि। ढाम ढंढा ढुंढारा॥
कूरंमा पज्जून। काम किनो कुट्टारा॥

(१) ए० कृ० को०—कालोरी। (२) ए० कृ० को०—गरल।

सांरुडै भुभभ उलभिभया। लोहानैं लज्जी वही ॥
जलंगम बंधन सेवरा। तें भट्टां ट्रुग्गा लही ॥

छं० ॥ ६६६ ॥

कविचन्द वचन।

सलष अलष करिं जुद्ध। साहि गज्जन वैसाद्यौ ॥
कैमासें बर बंधि। भीम भोरा घर गाद्यौ ॥
तूंवर वर उच्छारि। अप्प न्नाचा कहि फेरी ॥
कमधज्ज घरधक धोरि। धरनि जित्ती अजमेरी ॥
हों भट्ट चट्ट जस अजस पढि। भरों साषि सुरह समर ॥
हम्मीर मंत चुकंत सभर। हसहि देव दानव अमर ॥

छं० ॥ ६६७ ॥

हम्मीर वचन।

भोरै रा भारथ्थ। कथ्थ जाने तूं भांई ॥
पामारां पज्जून। लिये पट्टन वै सांई ॥
मे कह्यो कैमास। हथ्थ भीमा बद्धानी ॥
तूं जानै चहुआन। बार बर तूं इच्छानी ॥
सलर्षा सलुभ्भ ग्रैह्यां हुआं। अब लग्गाई बत्तरी ॥
सुरतानं कालिह आनों धरा। आज तुम्हारी रत्तरी ॥

छं० ॥ ६६८ ॥

मुह कढ्ढानी बत्त। चंद जानी पहिलाही ॥
ते सोई रै काज। भरकि उट्ठे अच्छांही ॥
तूं आरज आजान। बार ढिल्ली घर[1] अड्डा[2] ॥
तूं रंघन हिंदवान। पान राजन तो चड्डा ॥
आगर बुलाइ गो बंभनां। गर बड्डा पड्डा मुहा[3] ॥
जालपा जागि पुच्छाइयां। जो राषै भम्मा दुहा ॥

छं० ॥ ६६६ ॥

[१] ए० कृ० को०—वर। [२] मो० चढा।
[३] ए० कृ०—गर वढा पडा सुहा।

चहुआना रै रजधान । सामंत बड़ाई ॥
ते बोलो वर लागि । जाइ कनवज्ज झुझाई ॥
ए गोरी साहाब । दीन जानै पहिलोना ॥
हसम हय ग्गय रैस । देह दंष्यौ दह गोना ॥
कै काम कलह कंदल चढौ । कै कम्मां मर्त्ता गढौ ॥
बे काम भदु गलहां पढै । जिन भंजौ दिल्ली सढौ ॥

छं० ॥ ७०० ॥

कविचन्द बचन ।

गलहां काज हमीर । देव देधी सिर दिन्ना ॥
गलहां काज हमीर । अग्ग सध्यौ जुउजिन्ना ॥
गलहां काज हमीर । राज मुक्यौ रघुराई ॥
गलहां काज हमीर । मंस कथ्यौ सिव सांई ॥
हमं गलहवांन गलहा करैं । तुम गलहां लग्गै बुरी ॥
म्रत लोक जीव जम पंजरै । तुम जानौ छुट्टै दुरी ॥

छं० ॥ ७०१ ॥

हम्मीर बचन ।

अरे चंद तुम गलह । इहां नाही अधिकारिय ॥
ए घर जानी षेल । नही डिभरू पिल्लारिय ॥
इहै अग्गि नहि दीप । ग्रहै आगैं होइ दिष्षैं ॥
जब फुट्टै आकास । कोंन थिग्गरी स्हरष्षै ॥
हम दुरें नही जीवन मरन । मह लागै गलहां बुरी ॥
मो मत्ति इहै अप उब्बरी । करौ मंति गो ब्रह्म छुरी ॥

छं० ॥ ७०२ ॥

कविचन्द बचन (आख्यान कथाओं का प्रमाण दे कर हम्मीर को समझाना)

सुन हमीर इक अलुक । गरुर गाढी मिचाई ॥
तब उलूकह देषि । गरुर जोरा मुसकाई ॥

तब अलूक भय भयौ । गरुर अग्गैं कर जोरै ॥
मोहि तहां लै जाहु । जहां कोई जीव न तोरै ॥
धरि पंष ढंकि साइर गुहा । तहं बिलाव भष्षइ भरन ॥
सनमंध देह जष्षइ परन । मिटै न सो राजन मरन ॥
छं० ॥ ७०३ ॥

दूहा । गरधि बागुरि सिंघ कौ । दावानल भय मानि ॥
ससि मंडल में मृग बसत । ग्रहन राह सोइ आनि ॥
छं० ॥ ७०४ ॥

गाथा ॥ ईसं सीस मयंकं । सरन रहिय ज्यों भय मंने ॥
रुंड माल छल राहं । अनचिंतियं आय घेरिय तथ्थं ॥
छं० ॥ ७०५ ॥

हम्मीर बचन ।

कबित्त ॥ केहरि कंदर द्वार । भिल्ल मुगता फल पायौ ॥
फिटक जानि पाषांन । मूढ अज गल बंधायौ ॥
कोइक समै पारषी । मिल्यौ जवहरी बिचष्षन ॥
मुह मंग्यौ दै मोल । तोल करि आनि ततष्षन ॥
अवलोकि तेज पानी सरस । महिपति जरिय किरीठ महि ॥
इहि रीति चिंति कविचंद कहि । हाहुलि राव हमीर कहि ॥
छं० ॥ ७०६ ॥

पुनि अष्षिय हम्मीर । सुनहु दैविय वर दाइय ॥
मार पिट्ठ मोरिंग्ग । अंग सोभा दरसाइय ॥
तिन को लै मंदमति । षोटि नंषत करि लघुता ॥
मंडल ग्रसी रमंत । बंडिय सो पावत प्रभुता ॥
ब्रजनाथ हाथ गहि माथ धरि । मुरली मुख बज्जावही ॥
मिलि सकल गोप गोपंगना । मुकता फल सुबधावही ॥
छं० ॥ ७०७ ॥

कविचन्द बचन ।

चरचि तेल सिंदूर । बहुरि बंधे सिर चंमर ॥
आभूषन पहिराइ । ढंकि ऊपर पाटंबर ॥

चलावंत मुह अग्ग। दुरद नरपति कैं दिट्ठे ॥
झगरि झुंड में घात। आय बन मंझ अपुट्ठे ॥
अप अप्प उतन लग्गत सदा। मिट्ठौ हाहुलि राव धन ॥
कविचंद कहत पिछताइगौ। मत्ति करै दिसि जवन मन ॥
छं० ॥ ७०८ ॥

हम्मीर वचन।

दूहा ॥ बहुत कहत हम्मीर सुनि। अब कछु रहत रसन्न ॥
थान भिष्ट सोभत नहीं नर नष केस दसन्न ॥
छं० ॥ ७०९ ॥

कवित ॥ दसन दुरद सौं भइय। पहिर बनिता कर चूरिय ॥
सरहि केस सोभइय। राज सिर सभा सँपूरिय ॥
केहरि नष सोभइय। कनक मढि कुंअर घलत गर ॥
सूर बीर सोभइय। सिंघ सा पुरस परड्डर ॥
हाहुलि कहंत कविचंद्र सुनि। अब्ब जुगति बन अहि घनिय ॥
पहिले न करिय आदर भरनि। मन विचारि संभरि धनिय ॥
छं० ॥ ७१० ॥

कविचन्द वचन।

अरनि मद्धि धसि कूप। परत नर पथिक अड फर ॥
पटं बल्ली अवलंबि। नागं अवलोकि चरन तर ॥
सिर पर सिंधुर आय। सुंड गहि साष हलावत ॥
तुह छत्ता मुह आलि। उड्डि तिहि तन पलटावत ॥
मधु बुंद परत चट्टत अधर। सकल दुष्ष जिय भुल्लइय ॥
इम विषय सुष्ष कविचंद कहि। किम हमीर मन डुल्लइय ॥
छं० ॥ ७११ ॥

कविचंद और हम्मीर का ज़ालंधरी देवी के स्थान पर जाना।

दूहा ॥ तत्त बत्त जानौ सबै। इम माया दुच्छांमि ॥

चलि जालंधर देहरै। मिलि जालय पुच्छांमि ॥

छं० ॥ ७१२ ॥

नालिकेर फलदल सुफल। कर कपूर तंमोर ॥
उंभै सुनर पूजन चलै। द्वै सब सथ्थ बहोरि ॥

छं० ॥ ७१३ ॥

जालपा के स्थान का वर्णन।

कवित्त ॥ देवि थान जालंध। पच षोडस, बारस गुर ॥
करित कोट. अछिरन। पंति पंतिनि दिष्षत वर ॥
मनि न्रिप उंत जंबू नरिंद। चंद बंदी बंदंत उर ॥
मनो बड़वा नल लपट। कोटि फुट्टी जालंधर ॥
मनो मोहनी रूप है अवतरी। कै महिल कहल भांई बंधौ ॥
ससि एक. कोटि घर ज्यौं जुबह। सो कविराज ओपम सधी ॥

छं० ॥ ७१४ ॥

च्यारि कोट वज्जंग। मद्धि जालपा सुथानह ॥
हम छत्र जरि मुत्ति। मंचद्र ग्गा अंपानह ॥
करिय सनान पवित्र। धोइ धौवत तन मंडिय ॥
सम सुगंध पढि छंद। जाय कुसमंजलि छंडिय ॥
करि धूप दीप नैवेद मिलि। राज्ञ अंदेस संदेस कहि ॥
बोली न बयन. देवि तदिन। अजुत्त हमीर सुबत्त लहि ॥

छं० ॥ ७१५ ॥

कविचन्द का देवी की पूजा करके स्तुति और निवेदन करना।

दूहा ॥ कुसुम मंडि मंडलि. सिरह। चंदन चर्चित चंदि ॥
मुक्ति गंध दिय धूप द्विज। जै जालंधर बंदि ॥

छं० ॥ ७१६ ॥

अवनो अंबी अंब सुनि। अंबी अंब सुबंभ ॥
अंबनि चंद उचार किय। सुतन अनंदिय संभ[१] ॥
छं० ॥ ७१७ ॥

देवी (जालपा) जालंधरी की स्तुति।

भुजंगी ॥ द्रुग्गे हिंदु राजान बंदीन आयं। जपै जाप जालंधरं तूं सहायं ॥
नमस्ते नमस्ते ह जालंध रानी। सुरं आसुरं नाग पूजा प्रमानी ॥
छं० ॥ ७१८ ॥

ह्रीं कार रूपं सुआपे विराजी। क्लींकार भंकार हंकार साजी ॥
ऊंकार रूपं ओंकार धारी[२]। प्रियं कारनं कारनं सार सारी[३] ॥
छं० ॥ ७१९ ॥

सिवं संपुटं बीज प्रनव्व रूपं। स्वहाकार षटकार हंकार ओपं ॥
सुरं षोडसं रूप चोदस्सि मानी। चयं तीस[४] व्रन्नं सुविन्नं प्रमानी ॥
छं० ॥ ७२० ॥

चयं रूप ब्रह्मादि संध्या सकत्ती। चयं काल त्रैलोक त्रैबेद रत्ती ॥
अदम्भूत रूपं सुअब्बै समाया। गुनातीत आतीत[५] जालंध राया ॥
छं० ॥ ७२१ ॥

जपै तोहि जापं सुधामं प्रमानी। दियौ अब्ब सिद्धिं सुरिंद्री सुरानी ॥
प्रथीराज चहुआन दीनो उतारं। तहां दुंद नामी करै अब्बसारं ॥
छं० ॥ ७२२ ॥

कह्यौ तोहि प्रन्नाम[६] मो सिद्धी देवी। प्रकारं सुधारं विवद्धी सुसेवी ॥
अहं माकस्यौ हाहुली पास काजं। तिनं पुच्छमं माव साक्ति राजं ॥
छं० ॥ ७२३ ॥

वाही कारनं अब साराज अंबी। पुहं पंजली छंडि सीसं सुलंबी ॥
रह्यौ आप यह्यौ दुअं पानि मंडी। अगं कारनं जानि गोली न चंडी ॥
छं० ॥ ७२४ ॥

---

(१) ए० कृ० को०—सिभ। (२) ए० कृ० को० सारी।
(३) ए. कृ. को.—राजी। (४) ए.—त्रयं जीम।
(५) मो.—आनीत। (६) ए. कृ. को.—प्रमान।

हम्मीर का देवी से निवेदन करना।

कवित्त ॥ कहि हमीर सुनि देवि। तत्त वादी कवि आया ॥
कौ को हिंदू को तुरुक। कौन रंकं सु को राया ॥
को रविंद को जिंद। कौन तापस को छाया ॥
को साहब को राज। कवन सुकवि कह गाया ॥
इह परम हंस संसार हित। तूं माया तूं मोहं मत ॥
जानों न बाम दच्छिन करन। हौं सांई संसार रत ॥

छं० ॥ ७२५ ॥

कवि चन्द का देवी के मंदिर में बन्द हो जाना और हम्भीर को शाह की सहायता के लिये जाना।

एह परत्तर दीह। चंद जान्यौ चहुआनं ॥
जिन भुजानि धर भार। भोमतीय अधरं भानं[1] ॥
हसम हयं गय देस। दीह घट्टै बल घट्टै ॥
धन्न मरन तिन जानि। महल सिर सारे पट्टै ॥
आवृत्त बात जोगिनि पुरह। भव भवस्य इह न्रिमयौ ॥
कविचंद रुक्कि रंच्यौ जियन। ग्रिह गोरी हाहुलि गयौ ॥

छं० ॥ ७२६ ॥

उक्त समाचार पाकर पृथ्वीराज का क्रोधित होना।

दूहा ॥ सुनिय बत्त चहुआन न्रिप। धरिय धीर मन पान ॥
हौं अभंग अनभंग बर। हौं भंजन सुलतान ॥

छं० ॥ ७२७ ॥

कुंडलियां ॥ रोकि कविंदहि अप्प मिलि। सो सुरतान अबुझ्झ ॥
सुनत राज प्रथिराज कै। हवि लागी उर मझ्झ ॥
हवि लागी उर मझ्झ। संझ आई गुर गल्हां ॥
भट्ट बसीठह रोकि। अप्प है वै दिसि हल्लां ॥
दस हजार हैवरनि। लष्ष पयदल्ल श्रम वृंदा ॥

(१) ए० कृ० को—भौमाति अंधर भानं।

मिल्यौ जाइ सुलितान । रोकि देवल कविंदा ॥
छं० ॥ ७२८ ॥

चामंडराय का कहना कि सब लोग चार चार तलवारें बाँधें, जो जिसमें जा मिला सो जानेदो।

दूहा ॥ चवै राइ चामंड इम । अहो राज प्रथिराज ॥
च्यारि च्यारि तरवारि झरि । भर बंधै सब आज ॥
छं० ॥ ७२९ ॥

मरन तुच्छ मारन बहुल। हम उन अंतर एह ।
एक सु पक्की निजर की । अरि कर कची देह ॥
छं० ॥ ७३० ॥

कवित्त । सुनिय राज इह रीति । बीर संसार सपन्नौ ॥
अवर रत्त संकुचित । गुनज मुक्कित अपन्नौ[1] ॥
सहन अगर[2] तन संग[3] । मनह छचिय छल लग्गा ॥
क्रोधतश्रम्म मथिवचन । लोभ लग्गा सह अग्गा ॥
सल्लिता सुनीर वित्तं सरद । अब्ब सुप्प दंपति मिल्ली ॥
आसौज बीज संसार कर । रंज रंजि राजन मिल्ली ॥
छं० ॥ ७३१ ॥

पृथ्वीराज का धीर के पुत्र पावस पुंडीर को हम्मीर को रोकने के लिये बीड़ा देना।

बोल्लि राज प्रथिराज । पान अप्पै से पानं ॥
तूं धीरं जा धीरं । भीर भंजन सुरतानं ॥
है हमीर आधीर । स्वांइ द्रोही सिर बंधी ॥
लाज बडप्पन थाइ। सिंधु हम्मीर जु संधी ॥
सामंत सूर सगपन सरै । सुतेग बेग बंधै न कोइ ॥
पुंडीर राइ पावस्स सुनि । बंधि तेग रावत्त होइ ॥
छं० ॥ ७३२ ॥

(१) ए० कृ० को०—अवसर तहां सकुचि गुन जुंकत अपन्नो ।
(२) ए० कृ० को०-अंगार । (३) मो०-अंग।

पावसपुंडीर का बीड़ा लेकर तैयार होना।

पानि सामिलिय हथ्थ । बंदि सुरसरि चढि आइय ॥
बीर द्रगनि झलकंत । काच करषत जलझाइय ॥
सुवर राज प्रथिराज । सजिय बर अप्प तुरंगम ॥
नृप सनाह पावस नरिंद । हरचंद अभंगम ॥
दल मलन अरि आवृत्त बर । बंधन हाहुलि राव भर ॥
रनधीर धीर तन तन दलन । पुहप भ्रसम पावस सहर ॥

छं० ॥ ७३३ ॥

चौपाई ॥ मथ्यो नागपति कन्ह जगायौ । कै प्रलै काल चैनेत्र लगायौ ॥
कै हर हरन त्रिपुर सुरधायौ[1] । कै छिति एरन हरनाकुस सायौ ॥

छं० ॥ ७३४ ॥

जामराय यादव का मुसल्मानी सेना के निकास का रास्ता बांधना और पावस का सीधी पसर करना।

कवित्त ॥ तब पावस पुंडीर । बोलि राजन अमजद्दौं ॥
कै कोसन सुलतान । कोस कै प्रब्बत बंदौं ॥
बोलि राव रंघरौ । निरत कीनी कोहानी ॥
पंच पाल परबत्त । सत्तपानं सुलितानी ॥
जंगली ग्राम सामंत सह । सेन बढी बांधी बलह ॥
इम षष्प जाहिं मीरां दिसी । चढि पावस पावस कलह ॥

छं० ॥ ७३५ ॥

तब पावस रा पुंडीर । सज्जि सन्नाह संपन्नौ ॥
तीन सहस पुंडीर । बंध अग्गै रस भिन्नौ ॥
अप्प अप्प चिंतयौ । होय अग्गी जन मानं ।
लच्छि सुं लूटन काज । रंक धावै धन धानं ॥
लियै रावत्त कित्तिय कला । है गहि मोह माया तजे ॥
दुति भम्म भभ्भ सीमंत दुति । धीर धवल कंधह सजे ॥

छं० ॥ ७३६ ॥

(१) मो०—कै हरन्न हर त्रिपुरार सुधायौ ।

पावस पुंडीर की पसर का रोस और कांगुरे को तिरछा देकर सीधी राह जाना।

दूहा ॥ पावस चढि पावस अगमि। घन छची छिति रूप ॥
गावहि नौर हमीर घर। सुकि जवास उर भूप ॥
छं० ॥ ७३७ ॥

चढि पावस पावस रवनि। गजि दल बदल निसान ॥
धनि षग पंति[1] सनाह तुअ। मनु बद्दल विज्जुल भान ॥
छं० ॥ ७३८ ॥

पावस पावस मेघ सम। कै सम सुरति[2] प्रमान ॥
चित्त सुमन पुंडीर धरि। बाजि गुडिग्ग निसान ॥
छं० ॥ ७३९ ॥

कवित्त ॥ सह सेना चालीस। मध्य सत पंच तुरंगम ॥
टारि सूर सामंत। बज्र करिवार बज्र सम ॥
सस्च तेज जम जुत्त। जुद्ध आकूत अभंगम ॥
पुच्छि ध्रम्म सा ध्रम्म। क्रम्म बंधीन बंध सम ॥
कंगुरौ तिरच्छौ मुक्कि कै। इर अग्गें को धाइया ॥
तिन ठाम चूक चिंत्यौ हतौ। मिलन सरोसन पाइया ॥
छं० ॥ ७४० ॥

हम्मीर की और पावस पुंडीर की आगे पीछे छुआ छाई होते जाना।

यों छेटी भंजीय। मुद्ध भंजै नर धायौ ॥
चच्छया अवा भज्जंत। गरुर आगें नन जायौ ॥
ज्यौं अरथ न छिपै कविंद्र। मोह नन जाय ग्यान अग ॥
मुनि न जाय गम भावि। रूप नन जाइ दिष्ट अग ॥

(१) ए० कृ० को०–पंति।

(२) मो०–गुरति।

बन जाइ म्रिग्ग खगपति सुअग । आष जाइ नन गुरब अगि ॥
नन सकै ज्ञाय हम्मोर तिम । इम हक्यौ पावस सुलगि ॥

छं० ॥ ७४१ ॥

पावस पुंडीर का नदी का घाट जा बांधना ।

प्रात गयौ हम्मीर । सांझ पुंडीर सपत्तौ ॥
रंच नाव यकि गयौ । अजहु पत्तयो जिवस्नो ॥
पंथ वान पुच्छयौ । बली पावस धर जित्तौ ॥
रा हमीर उत्तरयौ । राव वीरत्त विरत्तौ ॥
आड़ौ उलगि पारेव बजि । धार ग्वार सों उत्तरी ॥
सोहां सुलहरि तप छंडि वपु । दिसि कंगुर संमुह भिरी ॥

छं० ॥ ७४२ ॥

तेंही बार सलित्त । नीर लग्गौ दों कंठ छलि ॥
ज्यों बछैल तिय मिलत । पाप छुज्जै सुभ्रम्म कलि ॥
ज्यों समंद सित पष प्रमान । किंत्ति फल करै सलिता ॥
मिह कलंक छिप ईस । फूल चक्कै सुष हलता ॥
यों परम जीव दावद्द सुद्दत । बज्र कोट तारन सगुर ॥
दुहु सेन मंझि सलिता परिय । सो ओपम जंपी सुबर ॥

छं० ॥ ७४३ ॥

बज्र काय दिष्षियै । सूर दिष्षियै नीर सुर ॥
ज्यो मृनाल दिष्षिये । कमल दिष्षियै उपर धर ॥
प्रवंस बाल सैसव समूह । मझिझ जोवन चिन्ह न लषि ॥
अरुन उटै ज्यों भान । किरन रत्तौ सुमंत पिषि ॥
द्रिग लषै क्रोध हिय मंझझतें । अंजुलिं से जल दिष्षियै ॥
सुर सहस मझझ वड्डे ति घट । सत बज्र बढ़ाई अष्षियै ॥

छं० ॥ ७४४ ॥

हम्मीर की सेना के नदी पार करते समय पुंडीर सेना का हमला करना । दोनों की लड़ाई ।

तजिय राव हम्मीर । बीर उत्तरति बिषम घट ॥

(२) ए० कृ० को०—पषि, पष ।

दुहु ओजन संभवति। रोकि पुंडीर सते[1] थट ॥
कछपंतर फिरि रोकि। बार उतरि हथि पारं॥
मार मार उच्चार। दोह घईति पछिवारं॥
पुंडीर धीर नंदन नवल। दिसि हमीर असिवर कढिग॥
उच्चरिय बेन पछिवान अरि। बीर बलिय संमुह चढ़िग॥

छं० ॥ ७४५ ॥

रा पावस पुंडीर। बोलि षंगा[2] रस पुंछी॥
बे बरह लिषि धीर। बीर बीरा रसं कंछी॥
कंक बंक रस पंक। बीर षुत्ते रस जुट्टी॥
दोउं बल धुनि प्रान। कंक क्रित क्रंम अवहै॥
बिब्भाय भाय षंजर कढिग। बढिग बीर बल्ली सुभर॥
मद मोष जानि छुट्टे जुरन[3]। बजिग लोह सह सूर धर॥

छं० ॥ ७४६ ॥

छुं धीरं जा धीर। सस्त्र छुट्टे पुंडीरं॥
पावस पावस राव। धार उज्जल झरि तीरं॥
षग्गानी झिल्लोर। सार बुट्टे तिन गानी॥
मनो बीजली बाल[4]। सथथ उब्भासैं पानी॥
धरो एक जुद्ध आवृत्त करि। जुद्धानी गंजागि लगि॥
हम्मीर राव पावस पुरिस[5]। बरिषा विय आवृत्त जगि॥

छं० ॥ ७४७ ॥

दूहा। जंबू हांहुलि राव सों। जज्जर बज्जि सनाह॥
भिरि संमुह पुंडीर बजि। बन जज्जर अगि दाह॥

छं० ॥ ७४८ ॥

(१) ए. क्र. को.—सर्वे।
(२) ए. कृ. को.—षंधार।
(३) ए० कृ० को०—उरन
(४) ए०—बाज
(५) ए० कृ० को०—सरिस।

इस लड़ाई में पांच पुंडीर योद्धा और हम्मीर के दो भाइयों का मारा जाना। हम्मीर का भाग जाना।

कवित्त ॥ निकरि बीर जल छंडि। रुद्धि अंबु पति अग्गा ॥
भग्गा बर हम्मीर। पुच पिय फेरि बिमग्गा ॥
पंच सहस पुंडीर। जुद्ध कीनौ अधिकारी ॥
हो हम्मीर नरिंद। षेत बोल्यौ हक्कारी ॥
पुंडीर राव पावस पहर। झर उझार लग्गौ गयन ॥
कट्टंति लोह परियार तें। सुनहु सूर सूरन वृनन ॥
छं० ॥ ७४९ ॥

बीर रुप उन्मथुन। सस्च बिज्जल कट्टी बर ॥
भय पावस पावस प्रमान। गज्जि घन बात रस्सगिर ॥
क्रोध पवन तट ईंट। टाढ़ कंपे कर करिवर ॥
सागर सलित सुसस्च। रुधिर जल बहै सारझर ॥
सुंष हुए सूर संजोगिनो। बीर बियोग कारंन कथ ॥
बैठेति चिंत पावस रिषह। संजोगिंनि नरपत्ति हथ ॥
छं० ॥ ७५० ॥

दूहा ॥ उभै पुत रन परिग वर। बर बंधे गिरि पुत्त ॥
रोस चढ्ढि फिरि बज्जि बर। उतरि सलित्त सुरत्ति ॥
छं० ॥ ७५१ ॥

पुंडीरां भग्गा भिरै। गहन हरं जुध भीर ॥
विषम तज आवृत्त नर। धनि धीरंजा धीर ॥
छं० ॥ ७५२ ॥

कवित्त ॥ सो पुंडीर बर जुद्ध। भिरे बुद्धे सा रानी ॥
तीर छुठे ग्रह नीर। तहां हम्मीर जुठानी ॥
बरवि मिलि सो बीर। तूटि मंडे बर नीरं ॥
मनु वृछय भार सो भज्जि। रुरै तुटि अंतर भीरं ॥
उरझे सरीर तुट्टे पगां। तार जेम बज्जे सुभिर ॥
निवरत सिव मिटि कंक रव। पन हमीर मुक्कि षेत तर ॥
छं० ॥ ७५३ ॥

उभै बंध हम्मीर। षेत बंघ रघुबंसी ॥
पंच बीर पुंडीर। मुगति लड्डी रन गंसी ॥
ज्यों बारुनि सुक्रि धाइ। लग्गी पानी बर भग्गा ॥
गहबि बाग पुंडीर। नींठ फेरे बर अग्गा ॥
यों लहरि लोह बाजै विषम। रा पुंडीर भारथ्थ जित ॥
हम्मीर भंजि हम्मीर पें। चढि तुरंग गोरी सुगत ॥
छं० ॥ ७५४ ॥

दूहा ॥ असी सत्त ग्रह गगन बर। परे भड़हिं पुंडीर ॥
सामि द्रोह नठ्ठी गयौ। मिले राज रनभीर ॥
छं० ॥ ७५५ ॥

चरज लागि सो राज कौं। जे बीरौं गिर युत्त ॥
सकल सूर धनि धनि कहैं। जिति हाहुलि राधुत्त ॥
छं० ॥ ७५६ ॥

पावस पुंडीर के हम्मीर पर विजय पाने पर पृथ्वीराज का पुंडार योद्धाओं को चौतेगी होने का हुकम देना।

बहादुय बाजी घरह। ढिल्ली वै वर थान ॥
हम्मीरह भज्ज भरह। जित पुंडीर प्रमान ॥
छं० ॥ ७५७ ॥

राजन अप्पन उचित करि। दिय सिर पाव सुध्यारि।
हुकम बेग बंधन कियौ। च्यारि च्यारि तरवारि ॥
छं० ॥ ७५८ ॥

पुंडरि वंश की सजनई का ओज और शाह का समाचार पाना।

कवित्त ॥ च्यारि च्यारि तरवारि। बंधि पुंडीर सहस चिय ॥
बज्र काल बज्र बहन। बज्र भल्लै सुबरन निय ॥

(१) ए० कृ० को०-मुंडि।

यों पन बंधन हमीर। छंडि पष्पर सनाह अग॥
बीर सर साधिंक। पंच बीरह पावस मंग॥
भं द्रग्ग बीर निधि लज्ज अग। उमड़ साहि अड्डो सुचलि॥
अगि लग्गि धीर मंडोन ज्यों। सजत सथ्थ उत्तरह घुलि॥

छं०। ७५९॥

इह सुनि बत सुलितान। चर धाय साहि पे पत्त॥
कहिय चरित पावस सरिस। साहिब धीर नमत्त[२]॥

छं०॥ ७६०॥

हाहुलिराव हम्मीर का शाह के पास पहुंच कर नज़र देना।

कुंडलिया॥ चमर पभर[१] खग मद मधुर। बाजी कंष्ठ कंठीर॥
मिल्यौ जाइ गोरी धरा। हाहुलि राव हमीर॥
हाहुलि राव हमीर। साम[३] द्रोही घर लग्गी॥
सील साच[४] तप तेज। भम्म धुर धारनि भग्गी॥
गौ विप्रह ग्रष छंडि। चौर प्रब्बत पति पामर॥
मिल्यौ जाय सुरतान। मधुर मृग मद लै चामर॥

छं०॥ ७६१॥

दूहा॥ च्यारि[५] च्यारि तरवारि भर। भरे बंधे घर धाय॥
इह चरित्त चहुआन दल। कह्यो साहि सौं जाय॥

छं०॥ ७६२॥

शाह का कहना कि पक्की पकड़ी हुई एक तलवार चार को मात करेगी।

तबै हांय बज्जी सुबर। धुनि पुच्छी सिसुताइ[६]॥
झुझ्झ परद्धयौ हिंदुदल। रहैं निदान कि जाइ॥

छं०॥ ७६३॥

(१) मो०—वर।
(२) मो०—साहि वंध रन मुत्त।
(३) ए० कृ० को०—परम।
(४) ए० कृ० को—साव।
(५) ए० कृ० को०—सांइ।
(६) ए० कृ० को—साव।

बाल वृद्ध जुव्वन कहिय। वे मंत्ति मत्ताय ॥
तेग एक पक्री गहै। चौ कच्ची भग्गाय ॥
छं० ॥ ७६४ ॥

करि निवाज सुरतान कहि। बित्तिय बुद्धि दिलीस ॥
गहिव साहि कंधै हनो। अब जित्तों दुनि' रीस ॥
छं० ॥ ७६५ ॥

शाह का काज़ी से भविष्य पूछना।

कुंडलिया ॥ इह गंदी मट्टी मुरद। तुम मरदों मरदानि ॥
तुम ग्रब्बी सब्बी हरन। मैं फकीर सुलतान ॥
मैं फकीर सुलतान। आप कहि पुच्छिय काजी ॥
भिस्ति भाप जौ कही। होइ हाजी कै गाजी ॥
जौ उमेद जिय होइ। राज होइ अलह बंदी ॥
कोइ गुमान जिन करौ। अहै काया इह गंदी ॥
छं० ॥ ७६६ ॥

पृथ्वीराज की सेना का हिसाब और उसकी अवस्था।

दूहा ॥ सज्यौ सेन साहन समंद। जंगल वै चहुआन ॥
धर अंगन मंगन लरिग। सुनत सूर अवुलान ॥
छं० ॥ ७६७ ॥

सबें सेन सत्तरि सहस। घटि वढि अप्पत बार ॥
जे भर भीरह सुह सधे[२]। ते बत्तीस हजार ॥
छं० ॥ ७६८ ॥

सहहि भीर न्वप पीर जिम। लज्जा धर भर भार ॥
धरनि धरनि तिन वर गनत। ते मर[१] बीस हजार ॥
छं० ॥ ७६९ ॥

बीस हजारन मद्धि दस। जे अग्या वर स्याम ॥
कर वज्जह वज्जी सहैं। ते पहु पंचह ठांम ॥
छं० ॥ ७७० ॥

---

(१) ए० कृ० को०—इहि।
(२) ए० कृ० को०—सधै।
(१) ए०—नर।

तिन मद्दि कवि गनि पंच सें । साथ भाष द्रढ काज ॥
देव गत्ति दैवान सों । तिन मंहि पहु प्रथिराज ॥
छं० ॥ ७७१ ॥

पृथ्वीराज का पुंडीर पावस को शाह के पकड़ने की आज्ञा देना ।

कवित्त ॥ चढी सेन न्रिप राज । बंधि पुंडीर तेग चव ।
धीर बोल वर पुत्र । द्राय चहुआनह हथ्थव ॥
सुरहर षष सुलितान । बंधि अप्पौ परिमानं ॥
दई दुवाह पावस नरिंद । गहन उप्परि सुविहानं ॥
करतार हथ्थ केतिक कला । नर अवरे जंपे बयन ॥
संवूह बार भावी सगति । षग्ग काम लग्गै गयन ॥
छं० ॥ ७७२ ॥

दूहा ॥ देषि सेन वर साहि पें । लै चरित चहुआन ॥
च्यारि च्यारि तरवारि वर । सह बंधी सुविहान ॥
छं० ॥ ७७३ ॥

पावस आगम धर अगम । दल साजे दोउ दीन ॥
अंवर छायो अभ्भरन । छिति छाइय छचीन ॥
छं० ॥ ७७४ ॥

उक्त समाचार पाकर शाह का सरदारों से कसमें लेना ।

कवित्त ॥ सिंधु उतरि सुलतान । वत्त कहि षा षुरसानह ॥
षां ततार रुस्तमां । सुझो तुम साच सुसाफह ॥
जै आलम आलंम । सकल हिंदू रा उप्पर ॥
जिहि ग्रहिं छंड्यो बार । वेर सो आप अप्प कर ।
तिहि ग्रहन हेत इक्को सुमन । साच झूठ करतार कर ॥
भग्गहु अभग्ग मत संग्रहै । धरहु लाज निज डुलन भर ॥
छं० ॥ ७७५ ॥

सरदारों के शाह प्रति बचन।

बोलि षान षुरसान। षान रुस्तम षां ताजी॥
षां ततार षीरोज। षान असमान बिराजी॥
षां नूरी हुज्जाब। षान षाना षुरसानी॥
हबस षान हबसी हुरेब। षान सुविहान बषानी॥
सुविहान षान षुरसान पति। बीरम ह्वरति रत्ति करि॥
दुहि बेर मरन जीयन भिरन। गहैं साहि चहुआन खरि॥
छं० ॥ ७७६ ॥

शाह का पुनः पक्का करना। और सरदारों का कसम खाना।

षां ततार रुस्तम०। साहि अग्गें करि जोरे॥
आन साहि सुविहान। हिंदु दरिया ढंढोरैं॥
गहि मुसाक गोरी चरन। परत भज्जन भज्जौ बर०॥
हों ग्रहयौ उन बेर बेर। छुट्टै व डंड भर॥
बर बंटि फौज दिष्षौ निजरि। सिंधु उतरि सुविहान बर॥
सत पंच ह्वर सोलषि घटी। बंधी बीर द्रोनति सुधर॥
छं० ॥ ७७७ ॥

पुनि षुरसान ततार। षान रुस्तम कर जोरहि॥
आन साहि मरदान। आन चहुआन बिछोरही॥
है हमीर हिंदून। दीन रोजा रंजानहि॥
पंच निवाज वे काज। जाय गोरी गुमानहि॥
सुलतान आन चहुआन सों। जो न बाल बंधे भिरहि॥
है मध्य हथ्थ सिर अज्ज हम। नहि दरोग दोजिग परहि॥
छं० ॥७७८॥

शहाबुद्दीन का सेना सहित सिंधु पार करना।

चितिय षट्ट सेना सुलष्षि। सज्जिय सन्नाह सदिष्षिय॥
अट्ठ सेन किय अच्छ। वज्ज सस्त्रं झिलि अष्षिय॥

तिन में पंच तिलष्य। वज्र भिल्लै कर बज्जी॥
एक लष्य दस भाग। फेरि दीयं न सुसज्जी॥
तिन मझ्झ एक सहसं सुभित। अड्ड पंच प्रपंचनि अधिक॥
तिन में सब सत समुद्र बर। पुन जेही गुन गुन सधिक॥
छं०॥ ७७७॥

दूहा॥ सजी सेन गोरी सुबर। सिंधु उतरि सुबिहान॥
राति सब्ब बर तिन सयन। आन षान षुरसान॥
छं०॥ ७७८॥

महमद रुहिल्ले का शाह से प्रतिज्ञा करना।

कवित्त॥ समन कमन मो नदी। मीर महमुंद रोहिल्लौ॥
नव सुकोरि भुअ दंड। एक इक लहै इकल्लौ॥
कितौक गड्ढ ढिल्लरी। कोन मंडल इह बारह॥
कितक सूर सामंत। कोन हम सम झुझ्झारह॥
साहाब दीन सुरतान सुनि। प्रगटं एह परं तंग वहि॥
दो जिग्ग मग्गहम संचरहि। जौन देइ चहुआन गहि॥
छं०॥ ७७९॥

शाह का चिनाब के उस पार तक आ जाना।

सजल पूर सतनंज। चरन साहाब सुभुक्किय॥
षां कमाल गष्परिय। निरति सेना रसु लष्षिय॥
परि प्रतीत सत्तनं सयन। देस नव नव बल तोलन॥
अथ जुवार[१] परुवर दिगार। जुम्मी[२] जुर बीलन।
दिव निसा देषि हित चित्त दल। कलन लोह कुंजर हयन॥
बचन भेष[३] लष्यन पिषन। करि कग्गर अग्गर बयन॥
छं०॥ ७८०॥

तम जित्ते जित बचलिय। राज राजन ग्रह गुड्डर॥
हमस हांम सामंत। मंतै पूरन भर सुब्भर॥

(१) ए० कृ० को०—जुम्मार। (२) मो०—जम्मी।
(३) ए० कृ० को०—भाष।

राज मिलन सुलतान। लिषि सुकग्गर फुरमोनं ॥
हवि वचन्न असमान। असंष गज्जिय सुरतानं[1] ॥
सम सिफति सील उत्तर तरह। दिसि दुस्तर संग्राम रन ॥
सम विषम बत्त पारसि कुसल। स्वामि बचनं हिंदू सधन ॥
छं० ॥ ७८१ ॥

शहाबुद्दीन का पृथ्वीराज के पास खरीता भेजना।

बचनिका ॥ बंधानौ कै लाजरी। कागर बंधी हेमांजरी ॥
मसि रुद्दोई मद्द । काजी कतेव सद्द ॥
मुल्लांन उचार उच्चै । बंचन राजा श्रोतान सच्चै ॥
राजा प्रथिराज आगें। सामंत सूर संचार लागे ॥
इन विधि सरजन हार जोरे। सुरतान जलाल दीन लोरे।
इनि विधि हिंदू मुसलमाम मुहानी। बयन नीरां रा जंजे सुरतानी।
छं० ॥ ७८२ ॥

शहाबुद्दीन के पत्र का आशय।

भुजंगी॥ बने भिस्ति बेषा षमे षान मंडौ। सजे षंभ थंभं नए रंड डंडौ ॥
इला सख्च रत्तौं न केली सुहावं। जमी जोर मनैं न ओरं किसावं ॥
छं० ॥ ७८३ ॥
हमं तुम्म एकं दुरं देव दाने। समं सिंध लोरैं नहीं एक बाने ॥
विनैं देव ध्रम्मं कुरानं पुरानं। न जानं सुने है कि आने सुमानं ॥
छं० ॥ ७८४ ॥
उभै रीति उत्तंग दुत्तंग देही। छिनं भंग भंजे सुकामंध केही ॥
मिलौ आदि मीरा सुभीरा भिरंदे। बिबी गलह मल्है सुसद्दै सिरंदे ॥
छं० ॥ ७८५ ॥
प्रियं प्रीति पैगंबरं साहि सज्जौ। सुत्रं जोर बंध्यौ सुलितानं मभ्भौ ॥
मिले हाहुली हेत हिंदू हमीरं। जनं जोर ठट्टै गुमानं गंभीरं ॥
छं० ॥ ७८६ ॥
कियौ साहि सिष्टा सच्चापै आपनां छलं छच हिंदू सिरं दीन मानं ॥

(१) मो०—षुरसांन

मिलौ साहि साहाब सोहैत बंधी। दहै देस छचंज पंजाब अद्दी॥
छं० ॥ ७८७ ॥

बरं षग्ग पुरसान सों मंडि छंडों। सुतं रेन उद्दव सौ सेव मंडौ॥
इसा जुद्ध कोने कहा लाभ पंडो। नियं नेहनी जोतिसों सेव षंडौ॥
छं० ॥ ७८८ ॥

सदा जोर हिंदू नथे मुसलमानं। जुराजोध दुज्जोध संसार आनं॥
उवं ज्वाव देहं सुसामंत राजे। तटं चन्द्र चिन्हाव सुरतान बाजे॥
छं० ॥ ७८९ ॥

बरं बोल्ल चामंड रायं सुनंदे। चितं चेत चिंता सुदेही भरंदे॥
छं० ॥ ७९० ॥

शाही दूत के प्रति चामंडराय के बचन।

कवित्त॥ सुने सद्द चामंड राइ। सुरतान असीठं॥
अप्रमान बोलहु बयंन। राजन सों ढीठं॥
तुम जानहुं सामंत। मंत जेहा अभ्यासै॥
मारुडै पट्टनै। पंन पानी पथ ग्रासै॥
बोला न बोल कित्ती बढ़ै। हेला हंकि हमीर सुनि॥
जालिम्म जोर मैं मेछ धर। सार बहंदै धार धुनि॥
छं० ॥ ७९१ ॥

पुहुवि नरेसर सबल राइ। हैं वे हठ जित्तौ॥
काटि सुभट थट बिकट। कलह घघ्घर में वित्यौ॥
गंजि गोरि रुम्मी तुरक। मरिया पत्ताई॥
बंधे साहिब दीन। लियौ अजमेर चढाई॥
इम जंपै चंद बरद्दिया। कपिसुल्लिह कुंदी कनै॥
दस सहस लड्ड ते डंड में। अजहुं सुथकै गज्जनै॥
छं० ॥ ७९२ ॥

सिंघ स्यारै परधान। बंध कीनों इक जंतह॥
मिल्यौ न भष्ष दिन एक। स्याल आन्यौ षर मत्तह॥
सिंघ फाल चुक्कयौ। गयौ षर जीवत थानं॥

फुनि आन्यौ समभाइ। हन्यौ केहरि वलवानं ॥
विश्राम सिंघ हिरदै सुकंन्। भष्यि गिद्दर जब पुच्छयौ ॥
नहि क्रन्न रिदै इहि सिंघ सुनि। देषि गत्त पच्छौ अयौ ॥
छं० ॥ ७६३ ॥

दूहा ॥ रहि बिधि तुम पति साह को। कहो सुबंका ष्यान ॥
निलज मेछ लज्जै नहीं। हम हिंदू लजवान ॥
छं० ॥ ७६४ ॥

दंत दरिद्री द्विपद रज। एपरि निपट घटंत ॥
सिंघ सिंचानौ सापुरिस। ए परि परि सुउठंत ॥
छं० ॥ ७६५ ॥

जद्दव जुवान और वलिभद्र का वचन कि तुम नमकहराम हम्मीर के भरोसे पर मत गरजो।

वर जंपै जद्दू जुआन। वलिभद्र सुध्रम्मं ॥
हम सुलतान सुक्रम्म। सेव कीनी बहु स्रम्मं ॥
तुम ओछानी तक्कि। बक्कि हाहुलि हम्मीरं ॥
थट्टा बंभन बास। पास उतरे गंभीरं ॥
हम तुम्म तेक में सीस धरि। बीच करीम कुरान को ॥
बंचौ जु सौंह सांह्रोह दर। लभ्भौ लभ्भ पुरान को ॥
छं० ॥ ७६६ ॥

मुसलमान दै हथ्थ। हामं हम्मीर मुहाई ॥
राज कुमारह रेन्। सेवं संचार दुहाई ॥
तुम मांगं पंजाब। अड पहु ग्राम न मुक्कं ॥
द्रोह मित्तह उद्दोत। परी जम्मौ जित सुक्कं ॥
हम लभ्भनि तुम्म लराइयां। वर भराहिं सिंघह समर ॥
गुफ अभै स्थानि संचरि रहै। सुभ सियार चष्यहि अमर ॥
छं० ॥ ७६७ ॥

मभ्भ्कह रावल समर। सिंह सिंह तन पुक्छिय ॥
जे मंता मंतेह। हवै लड्डू दुअ लब्भिय ॥

जौ जीवंदे जित्त। मुत्ति तो सरग समानी ॥
ना दिष्यो प्रथिराज। मुरै मुग्गल चहुआनी ॥
अवृत घत्त मतां लही। पर कज्जां सज्जां समर।
तत्तवाइत त्तव पराइयां। अप्पै देव दानव अमर ॥
छं० ॥ ७९८ ॥

शाह के यहां से आने वाले सरदारों के नाम और पृथ्वीराज का उनको उत्तर देना।

पी पट्टीय वसीठ। सथ्थ सुरतान कहंदे ॥
तुम सारा है भुज्ज। डंड भरि जीव रहंदे ॥
के भूले उपगार। कन्ह उपगार सुभ्झ भझ ॥
होहि न बड्डा बोल। चढ़े चंपी अन्न बुझ्झा ॥
दिथ दूत हथ्थ कागर दुजर। अगर पंचे मन साहि दिसि।
सोनी सुजान नीसथ्थ कथ। कहन बोल बर बीस बिसी ॥
छं० ॥ ७९९ ॥

सा बट्टू को अली। पंच तेरह करि मंडिय ॥
लष्यं छष्यिय च्यारि। षाम कांगर करि छंडिय ॥
षान षान ततार। षान रुस्तम षां हाजिय ॥
षां षीरोज कुसाब। हिंदु तुरकी पढि काजिय ॥
दीहांइ पंच पथ्थे वद्यां। दल सुरतानति संमुहा ॥
पंजाब मद्धि दिल्ली पहर। मिलि मध्यानैति विम्मुहा ॥
छं० ॥ ८०० ॥

कहि सोनी पतिसाहि। दुष्ट होइ कै सट भंगिय ॥
था लज्जी[1] सुरतान। सिंधु कह कज्ज उलंघिय ॥
पैगंबर दै बीच। मिटै बोलां बर संधिय ॥
एक बेर दूबेर[2]। बेर बेरह इन बंधिय ॥
सौ न छोड़ पहिलोन हलं। मुष देषावन देषिया।

(१) मो०—लज्जीवा। (२) ए० कृ० को—एक वार दुरबास।

क्रित-हित्त चित्त मलै नहीं। कहै बढ़ै गुर सिष्पियां॥

छं० ॥ ८०१ ॥

संतलज पार करके शाह का आगे बढ़ना और दिल्ली से लौट कर गए हुए दूत का समाचार देना।

चिपथ पंथ पव्वा पहार। गट्ठी दिसि वामह॥
जेल लंगर ग्रांव। बिहंथ बंधी जथ नावह॥
साहि तक्कि ताजिय चढंत। मुनामं मुन्नारह॥
दैकागर दूतान। कियौ सोनार सलामह॥
औ बंचि अप्प कुव्वाहिया। न किहु किय करतार कर॥
बच अड़ कढ्ढि पिज्जिय पलां। बंधि याहि चंपौ सुधर॥

छं० ॥ ८०२ ॥

तब बोलै साहाब। प्रति पट्टए चहुआनह॥
सो आयौ सानंमि। प्रान जोरे रव्वानह॥
बुझ्झै गोरी नरिंद। सयल जंगलपति जानह॥
तब बोल्यौ कम्माल। सुनौ बत्तां सभ्भामह॥
सामंत सूर सब जोर बर। बिन बेरी चामंड किय॥
थित ध्रम्म स्वामि रत्ते रहसि। तिन बर सज्जै ताम जिय॥

छं० ॥ ८०३ ॥

चहुआन सेना का बल सुन कर शाह का शंकित होना।

दूहा॥ सुनिय बत्त गोरी गरुअ। तनमन कंप्यौ ताम॥
चल्यौ मंद गति मन विकल। ज्यों ग्रेह नळढा काम॥

छं० ॥ ८०४ ॥

अन्य दो दूतों का आकर कहना कि राजपूत सेना बड़ी बलवान है।

कवित्त॥ विहथ कंठ साहाब दीन। सुरतान संपत्तहं॥

(१) ए० कृ० को०-मिट्ट।

दल बहल दरिया हिलोर। उप्परि कलि ऋंतह॥
समिध ताम दुत्र दूत। आय अति हित्त मत्त वर॥
सोलष्षे सुरतान। बोलि बुज्झे ध्रुवचचर॥
नंमि कहै गरुत्र गोरी सुनौ। चाहुआन वर जोर जुति।
मिलि आय सुभर सामंत सब। प्रान कलप्पे काज पति॥

छं० ॥ ८०५॥

शाह के पूछने पर दूत का राजपूत सेना के सरदारों का वर्णन करना।

दूहा॥ पुनि गोरी पुच्छेव चर। दल संष्या चहुआन॥
जे आगम संजोर दल। कहौ सुभट सब्रान॥

छं० ॥ ८०६॥

पद्धरी। संबन्नहि दूत प्रति गज्जनेस। चहुआन सुदल बल असहेस॥
उत्तर्यौ आय सतनंज सेन। सामंत सूर सिर लग्गि गेनं॥

छं० ॥ ८०७॥

घुम्मान राव पति चिचकोट। सनमंध सगप्पन आय जोट॥
दह तीन अग्ग सेना समथ्थ। भर लाज सुदल बल सिद्ध हथ्थ॥

छं० ॥ ८०८॥

कछ्वा जुलोह चावंड राव। चित्तै सुधंत्त जुद्धां जुदाव॥
पुंडीर आय चव सहस सथ्थ। चव तेग बंधि सज्ज्यौ समथ्थ॥

छं० ॥ ८०९॥

पामार तेत अब्बुअ नरेस। पहुमी सकाज आयौ असेस॥
पामार सिंघ अनभंग जंग। लग्गौ सुअप्प रन रोह रंग॥

छं० ॥ ८१०॥

परिहार मह्न सम पीप बंध। लग्गौ सु लाज भर जुद्ध कंध॥
कूरंभ राव बलिभद्र सथ्थ। परसंग षग्ग जा जुलिय हथ्थ॥

छं० ॥ ८११॥

जामानि राव सब सथ्थ ताम। जा काज सोज साजंग मांम॥
बग्गरी देव देवंग षेत। परसंग राय षीचिय सनेत॥

छं० ॥ ८१२॥

मारहंन सुतेज बीरत सहेज। गुज्जरह राम जज्जा[1] अजेज॥
आजानबाह माजे जुधान। अनभंग सूर जुद्धह जुतान॥
छं० ॥ ८१३ ॥

मोकल्यौ चंद कंगुर सुठांम। हाहुल्लि काम जुद्धा जुराम॥
सुक्काम आय सम संतुलेस। संजुरे सुभर सब्बां असेस॥
छं० ॥ ८१४ ॥

चै अग्ग सयन[2] असीस उड्ड। भर सबै सुद्ध एकंग जुड्ड॥
इहि बिधि सबै सेना सुगाजि। जांनेव साहि साजौ सुकाज॥
छं० ॥ ८१५ ॥

* जिहि थान उम्म हम रहे जाई। सो भू दुहथ्थ नंषौ षुदाय॥
हिंदू तुरक्क धन परिय चंटि। छिति छोति मेटि जलगंग छंडि॥
छं० ॥ ८१६ ॥

सुभि अवम बयन साहाब दीन। छन एक रहिय मन होइ मलीन॥
दिल्ली दिसानि तरवारि तोलि। गज्जनेस गज्जि पुनि कुप्पि बोलि॥
छं० ॥ ८१७ ॥

हिंदवान थान नंषो उषेरि। कैं बंच्च बेलि जिम कप्पि हेरि॥
कर फेरि मुंछ दद्धी सुलग्ग। असपति परत्त घरि फेरि पग्ग॥
छं० ॥ ८१८ ॥

जितौं संग्राम चहुआन जब्ब। सनमुष्ष करौं सिर षंघ तब्ब॥
छं० ॥ ८१९ ॥

शाह का सब सरदारों को बुलाकर सलाह करना।

दूहा। मुरग पेच फुनि बंधि सिर। कर षंचै कम्मान॥
सब उमराव बुलाई ढिग। मतौ मंडि सुविहान॥
छं० ॥ ८२० ॥

सरदारों का उत्तर देना कि अबकी बार चहुआन को अवश्य पकड़ेंगे।

कवित्त॥ चिंति साहि साहाब दीन। सुरतान तांक कबि॥
वोहि सबै उमराव। मंत सोचिंत स्वामि तबि॥

(१) मो०—जाजा। (२) ए० कृ० को०—अयन।

* छन्द ८१६ से लेकर छन्द ८२१ तक मो० प्राति में नहीं है।

षर चरिच चहुआन। कहिय सो आदिरु अंतह ॥
सोइ चिंत चिंतव। सबौ सब्बै मिलि मंतह ॥
जंपेव तांम ततार तमि। करै चिंत साहाब चित ॥
कै सजहि भिस्ति मारग सकल। कै तुम आनहि जुद्ध जिति ॥
छं० ॥ ८२१ ॥

काजी का शाह से कहना कि मेरी बात पर विश्वास कीजिए अब की चौहान जरूर पकड़ा जायगा।

भुजंगी ॥ तबै बुझयौ तांम काजी मदन्नं। तमं वृद्ध विद्या सुराज्जै(१) सदन्नं(२) ॥
सदा बंदिगो लाइ लागै सुमन्नं। सदानं कुरानं सुभासै सवन्नं ॥
छं० ॥ ८२२ ॥
कहै तम काजी समं साहि गोरी। धरी मुम्झ बातं षरं चित्त लोरी ॥
दिनं कालिह कुह दिनं उंच दीनं। गहौ चाहुआनं कला इंद पीनं ॥
छं० ॥ ८२३ ॥
परै मैन दूनौ भरं भार भारं। रनं रौद्र बित्ते अभूतं सुसारं ॥
षलं रुद्र रस्सं अभूतं भयानं। बिभच्छं समथ्थं उदथ्थं सयानं ॥
छं० ॥ ८२४ ॥
चढ़े कालिह चंपौ चिरं हिंदु सेनं। न चुक्कै कुरानं सुभानं सबेनं ॥
गहौ जीन हिंदू षलं दुष्ट भेसं। करौ थीदि षोली तनं इ प्रवेसं ॥
छं० ॥ ८२५ ॥

सब मुसलमान सरदारों का वचन देना और शहाबुद्दीन का आगे कूच करना।

दूहा ॥ सुनी बत्त साहाब सोइ। बंध्यौ जोर जुरान ॥
चल्यौ अग्गै(३) नीसान दै। चित्ति चित्त ईमान ॥
छं० ॥ ८२६ ॥
कबित्त ॥ आनि षान सुरतान। साजि साहाब सुहित्तं ॥

(१) ए० कृ० को०—सज्जै।　　　(२) ए०—मदान
(३) ए० कृ० को०—अग्गै

डेरा षाना मानि। करो प्रस्थान मिलत्त ॥
धरे धीर उङ्ग। चंग सुरतान चढंहे ॥
मन बढ्ढै हम्मीर। सत्य लै लीह कढंहे ॥
दस सहस संग आलम्म के। एजु देह दह पंच बस ॥
संसार सकल पूजै बली। करो जोर छोनीय गस ॥
छं० ॥ ८२७ ॥

दूहा ॥ मेछम सूरति सत्य किय। बंचि उराम कुरान ॥
बीर विचारति रत्ति हुअ। दिय मैलान मिलान ॥
छं० ॥ ८२८ ॥

शाही सेना की तैयारी वर्णन।

चोटक ॥ संजि सेन सुगोरिय साहिरनं। सु मनों दल बद्दल पंति बनं ॥
दसमत्त पयोहर पंच गुरं। इह तोटक छंद प्रमान धरं ॥
छं० ॥ ८२९ ॥

घन ग्रज्ज निसान दिसांन सुनं। बलहं जल जस्स सुपल्लवनं ॥
बिसरी द्रिग चष्षु न सुभ्भभयनं। जु बजे घनघंट निसान घनं ॥
छं० ॥ ८३० ॥

रभ नंकहि भेरि न केरि घुरं। सुबजे घन सिंधुअ राग सुरं॥
सुभयं गजराज उतंग उभै। सुचलै गिरि कैं मनु भंम सुभै ॥
छं० ॥ ८३१ ॥

गज गुघर उघर यों गुवरै। सु मनों तम के तन सो बुहरै ॥
बर गात परब्बत से दिपियं। छर वच्छर मेरति तेल लियं ॥
छं० ॥ ८३२ ॥

दिन छिप्पिय रेंन दिसा गुनियं। वर सद्दन कान नहीं सुनियं ॥
छं० ॥ ८३३ ॥

दूहा ॥ सबद कान सुनियै नहीं। मुंदि निसा दिन जान ॥
मीर पीर पैगंबरहु। सजि चल्लौ सुरतान ॥
छं० ॥ ८३४ ॥

ए० कृ० को०—मोदक।
(२)ए० कृ० को०—निघट।

सुसज्जित शाही सेना की पावस से पूर्णोपमा वर्णन।

पद्धरी॥ सजि चल्यौ साहि आलम असंभ। उप्पयौ जानि साइरन थंभ॥
जथ तथ्य साहि सेना सुदीस। उन्नयौ मेछ[1] बर बैर रीस॥
छं० ॥ ८३५ ॥

बाजहि निसान घन जिम दिसान। दामिनी तेग बर बक्कमान॥
बारुनि बहंत मद बूंद गंध। झुझझ्झै न भान दिसि विदिसि धुंध॥
छं० ॥ ८३६ ॥

धम्मलिय मिलिय कलग मिगसंद। झंझलग[2] सूर सुह सुरिग मंद॥
प्रज्जरहि पंथ पट्टननि सिंध। मिलि चलहि सिंगि आरम्भ गिद्ध॥
छं० ॥ ८३७ ॥

सिंधुर धरंनि संचरिहि सान। सुनियै न बयन सह दुरिग कान॥
चक्कीय चक्क मुक विकलंत[3]। निसि दरस सरस सारस मिलंत॥
छं० ॥ ८३८ ॥

प्रतिबिंब अंब अंबरनि तार। भुकतै न मुगति मंजर सिवार॥
धुंकार धुनति गाजहि निहंग। दस दिग्ग धरा पूरे समंग॥
छं० ॥ ८३९ ॥

चक्कित सुचित्त मन मिंत हित्त। रस उभय अम्म आनंद चित्त॥
दीपै अद्रप्प आलोल नेंन। बिसरीय कोक सुर मग्ग बेन॥
छं० ॥ ८४० ॥

निट्ठुरिय ढाल धर धरिय कोक। संचिय मुसाल संभरिय सोक॥
हसि चक्क चकी सों कहिग छंद। माननिय जानि दामिनिय चंद॥
छं० ॥ ८४१ ॥

असपति असंभ धर गहन हिंद। कोप्यौ कमाल गोरी नरिंद॥
दिवि दिवस च्यार इक करहिं फेर।[4] जोगिनि अनंद अच्छरि सुमेर॥
छं० ॥ ८४२ ॥

---

(१) ए०—मेघ। (२) मो०—झंझलि।
(३) मो०—विच्चलंत। (४) मो०—माधव दिवस्स इक कराहिं फेर।

कुह किलकि सौन वर बरहिं बीर। उच्छरहि मीन धर गरुव नीर॥
आवरत सेन दल इलिग[1] साहि। गाइन असंधि अहि भीम धाहि॥
छं० ॥ ८४३ ॥

अग्गें सुरेंन पच्छैं पुकार। मावलिय संक्रमन सन्निवार॥
रवि घरइ राह अरु केत गत्ति। जानी न चंद ग्रह ग्रहन मत्ति॥
छं० ॥ ८४४ ॥

दूहा॥ कहहिं चंद रन अम्भरन। मरन सुधन्न धनाह॥
बर नरिंद दल हिंदु कैं। भई सनाह सनाह॥
छं० ॥ ८४५ ॥

राजपूत सेना की तैयारी वर्णन।

पद्धरी॥ कहि कूह बहि सन्नाह सह। मंगिय सुहिंदु षुरसान रुह॥
डंमरिय डहकि अंमरिय रत्ति। संभरिय रोव रावल सुवत्त॥
छं० ॥ ८४६ ॥

बंबरिय बीर रोमंच उट्ठि। ब्रह्मान भ्रंम कसि अंग पुट्ठि॥
ग्रम्मानि हेम कमलानि कंठि। बंदिय त्रिभूति सिंगिय सुगंठि॥
छं० ॥ ८४७ ॥

अवधूत धूत जोगिंद राज। चढ्ढी सुसक्क गढ़ चित्र लाज।
धज मुंज धज्ज नीसान नद्द। आहुट्ठि रांड असि कसिग हद्द॥
छं० ॥ ८४८ ॥

सकु सकति नाग भुज भार साजि। प्रज्जरिग क्रम्म सुध ब्रम्ह गाजि॥
नभ मिल्लिन रत्न चष द्दिष्टि द्दिष्टि। मंडिय सुटोप सिर[2] निट्ठ निट्ठ॥
छं० ॥ ८४९ ॥

मृग जाति काय पष्षर पवंग। सित असित पीत कुंजनि कुरंग॥
उर राह बाह रावत्त भीर। निरमल्लिग नेह जनु लज्ज नीर॥
छं० ॥ ८५० ॥

गुन गनत तत्त वज्जी सुवत्त। बंधिय सुहंसि सिर छहति सत्त॥
हिल्लुरिग अंब बर बरन बीर। प्रिय प्रियम हेत त्रिप तिरन तीर
छं० ॥ ८५१ ॥

(१) ए० कृ० को०—इहिग। (२) ए० कृ० को०-सन।

पंडव सुषंड चहुआन चंड। सजि चढिग राज जोगिंद दंड ॥
सुनि निज नफेरि संजोई कंत। आरुह्यो गरुर हय हय हसंत ॥
छं० ॥ ८५२ ॥

जामराय यादव का पृथ्वीराज से कहना कि ईश्वर कुशल करे रावल जी साथ में हैं।

कबित्त ॥ पानि जाम जद्दों जुबान। लगि कान कह्यौ इह ॥
प्रिथा कंत इह बार। तात कुसलुत्त होय ग्रह ॥
छंद राइ कुरंभ। सिंभ पूजन[1] पति जंपिय ॥
करुन हथ्थ पुंडीर। राव पावस कत कंपिय ॥
महि महन सोह सिह गुरिंग। तिह सहाय रावर समर ॥
तुम सम न कोइ हिंदू तुरक। भिरि न सकहि दानव अमर ॥
छं० ॥ ८५३ ॥

पृथ्वीराज का समरसी जी से कहना कि आप पीठ सेना की देख भाल कीजिए।

गरुर हंकि दानव नरिंद। दिसि वाम काम तत ॥
झलकि झलकि झिंगुरिग। नेन दर्ग[2] बेन कहत बत ॥
तुमं दष्षिन गिरि गरुअ। संग रत्न रंग हरष्षय ॥
तुम समान कोइ आन। हमहिं[3] हम हितू न दिष्षिय ॥
जब लग्गि मुझझ भीर न परै। तब लगि भट भिरन न करौ ॥
आरज्ज सोम संक्रट सतिन। सजिन सेन चंपत परौ[4] ॥
छं० ॥ ८५४ ॥

(१) ए०—पजून।
(२) मो०—द्रग।
(३) मो०—हमहि हिन्दू नह दिष्षिय।
(४) ए० कृ० को०—फिरै।

रावल जी का कहना कि समर से विमुख होना. धर्म नहीं है।

हँसि नरयंद आनंद। राज राजन प्रति पत्तिय।
तुम सनेह सम्मरिय। मोहि दष्षन लगि बत्तिय॥
ना हं ना तुं ना जगत। न मिच्छ इच्छ नन॥
नहिन सूर सामंत। सूर अंकुर गहन मन॥
संग्राम धाम धर छचियन। पर इत पुर परतर लहै॥
चहुआन आन सोमेस सुत। विमुष जीह जंतनि कहै॥
छं० ॥ ८५५॥

रावल जी और पृथ्वीराज दोनों का घोड़ों पर सवार होना।

दूहा॥ दय दच्छिन दच्छिन अपुन। प्रथम प्रिया पति कंत॥
गरुर कंध थप्परि प्रयुत। प्रभु प्रथिराज सुभंत॥
छं० ॥ ८५६॥

असुर सेन सम संचरिग। दल बद्दल विष मंत॥
बहुरि वियौ प्रब्बत सुभित। प्रथुरु संजोई कंत॥
छं० ॥ ८५७॥

भुजंगी॥ दुअं सेन आवृत्त उत्तंग अंगं। दुअं छच सेतं पियं नेत रंगं॥
दुअं सार सिंधू उरं अग्र दौनं। दुअं बीच सा चंग लंकाल झीनं॥
छं० ॥ ८५८॥

दुअं पथ्य रथ्यं सरथ्यं परामं। दुअं सेन आधासि आपा विरामं॥
दुअं जोर जीवा रजं नार कंधं। समय एन संमं कुलिं कहत धंधं॥
छं० ॥ ८५९॥

रावल जी का पृथ्वीराज से इशारे से कुछ कहना और राजा का उसे समझ जाना।

दूहा॥ तन अलंग अंगह उभय। अप अप्पानैं सेन॥

कछु जुकन्न लगिकें कह्यौ। [1]सुन न्रप परषिय वेन॥
छं० ॥ ८६० ॥

रावळ जी के इशारे पर सेना का व्यूह वद्ध किया जाना।

पद्धरी ॥ रस प्रीति सुसाजन वार तिन्न। न्रप भेटि समर रावर सुकिन्न॥
रस करन सथ्थ पावस पुंडीर। हनिवंत जिसौ धीरह समीर॥
छं० ॥ ८६१ ॥

उनलंक जालि परबत्त पारि। अंजनिय अनिल ग्रम्भह विचार॥
रस मरद देषि जादौंनि जांम। वय रूप रूप एकह सुमांम॥
छं० ॥ ८६२ ॥

गलं कंठ माल मोतिय सुमेलि। संजोगि तात दन्नियत[2] केलि॥
लिय लष्य हेम कैलास गूर। रेसमिय सोप उद्दोत भूर॥
छं० ॥ ८६३ ॥

अदभूत देषि बलिभद्र सद्द। गाजने साहि जे हरन मद्द॥
अभिलाष हास्य घट जीव कीन। अनलषिय आन लषियै प्रवीन॥
छं० ॥ ८६४ ॥

बीभच्छ नैन मंस लहन सोह। जय लागि गरुअ हय छंडि लोह॥
निरवान राइ रंधन सुसंत। गल गृझिय[3] नेन लांगत पंत॥
छं० ॥ ८६५ ॥

संजोगि सयन अंगुलि बताय। सम समर साहि रावल दिषाइ॥
नर सहित नेत बंधें नरिंद। मनि मरन भौन जिम सुक मुनिंद॥
छं० ॥ ८६६ ॥

पंडु परी छित्त अवतार सुभ्भ। हरि चक्रवान राषै सुग्रभ्भ॥
उहि बरन भेष चिचंग राव। मिलि दैव जोग संजोग दाव॥
छं० ॥ ८६७ ॥

इन लभ सुलभ्भ लाह्र विषानि। इन मरन जियन देषियन हानि॥

---

(१) ए० कृ० को०—सुनत परछिय वेन।
(२) मो०—दिछियत, ए०—दिन्नियत।

कोइ गुझ्झ मंत समझ्झौ न अग्ग। कहि जाम देव सों कान लग्गि॥
छं० ॥ ८६८ ॥

आगम सुबात भव भूत हेत। सिर जैत अप्पि तहां छत्र सेत ॥
गहि पान पानि पच्यौ पमार। लिय दच्छिनेस ढिल्लन पहार ॥
छं० ॥ ८६९ ॥

चावंड राइ मुष राषि नाइ। भ्रम होइ मोहि जिहिं पातिसाहि ॥
* षोड़सह दून रस[२] रति तिवार। अंगुलिन गनित दस कढिग[३] मार ॥
छं० ॥ ८७० ॥

राजपूत सेना का सुसज्जित होकर शाही सेना के साम्हने होना।

कवित्त ॥ बिल्लुल्लि साह ढिल्लरियं। माहं लल्लरिय निरष्षिय ॥
जुरन जैत जग हथ्थ। नाथ सिर छत्र हरष्षिय ॥
असमान पांमार। रहनं झंडे झुकि गड्डे ॥
अब्बू राइ नरिंद। बाद बीरति कर छंडे ॥
करन इत बान बानैत जनु। चाव सबय नेहं कुरिय ॥
सित रत्त पीत कज्जल लखित। सखित कमल दल संकुरिय ।
छं० ॥ ८७१ ॥

मुरिल्ल ॥ लज्जिय लौ बज्जिय लौ सारं। गज्जिय लौ अरतिय उंभारं ॥
सज्जिय लौ हिंदू दल धारं। जानि कि मेघ घटा करिवारं ॥
छं० ॥ ८७२ ॥

घटं घट जिय विज्जलिय विराजैं। गरुअ पंति रति रनि तहां साजैं॥
तत्त तहां तोरन तिल लाजै। मंत मरन दिष्षैं द्रुक गाजै ॥
छं० ॥ ८७३ ॥

बंधिय फौज राज जपि सारिय। रंगी जानि क्रिसान दिषारिय ॥

---

(१) ए० कृ० को०—गलगिय (२) ए०—सर
(३) ए० कृ० को०—गमार। * राजा प्रथीराज री फौज हजार त्रयासी जी की सरव्यई तुक में कही। षोड़ द्दन बत्तीस, रस नौ, रति छः, तिवार वॅरेह लिषा ३६=३२+६+६+३६
(कृ० प्रति) ठाकुर कृष्ण सिंह जी की टिप्पणी।

दंगी दोवर दोस निकारिय[१]। दिट्ठे दिट्ठ मिले हहकारिय ॥
छं० ॥ ८७४ ॥

पृथ्वीराज की तैयारी के समय के ग्रह नक्षत्रादि का वर्णन।

कवित्त ॥ बर मावसि सनिवार। राहु रवि ग्रहे[२] संपतौ ॥
न्रप संमुह जोगिनी। पंछि पच्छिम औलितौ ॥
वाइ विषम संमूह। चक्र जोगिनि दिस रुंधी ॥
राहु न्रपति सत्तमौ। भान अष्टम गुर संधी ॥
साध्रम्म बढ़िय नभ छहयौ। वाम काम छुट्टे दरस।
जम रोज घत चढ़ि दीन बिय। मुकति बीर बंछै परस ॥
छं० ॥ ८७५ ॥

राजपूत सेना की चढ़ाई का ओज और व्यूह वर्णन।

भ्रमरावली ॥ सखिता जनु सत्त समुद्दलियं। दोउ राज महाभरयं मिलयं ॥
करकादि निसा मकरादि दिनं। बर ब्रिद्धत सेन दुबाल मिनं ॥
छं० ॥ ८७६ ॥

दोउ राज रयत्त सुरत्त उठे। बहुरे मन पावस अभ्भ बुठे ॥
निसि अद्ध विभत्ति निसान घुरं। दरिया दिव जानि पहार गुरं ॥
छं० ॥ ८७७ ॥

सहनाइन फेरि कुलाह लियं। रस बीरह बीर मिले बजियं ॥
ठहनंकित घंट निघंट घुरं। कल कौतिग देव पयाल पुरं ॥
छं० ॥ ८७८ ॥

लगि अंबर बंबर उंमरियं। बिसरी दिसि अट्टति धुंधरियं ॥
समसेर दुसैन समा इन से। दमकै दल मद्धि तराइन से ॥
छं० ॥ ८७९ ॥

चमकै चव रंग सनाह घ्रनं। प्रति बिंबति मिंत मयूष बनं ॥

---

(१) मो०—दिषारिय।
(२) ए० कृ० को०—घर।

दरसी दल की दल ढल्लरियं। सुमिरैं घर कायर बल्लरियं॥
छं० ॥ ८८० ॥

जिनके मुष मुंछनि मच्छरियं। निरषें तिनके तन अच्छरियं॥
न्रप जोइ फवज्ज सुबंटि लियं। मुह मारक चावंड रायं दियं॥
छं० ॥ ८८१ ॥

भुज दच्छिन अब्बुअ राव रच्यौ। सिर छच सपेद सु आनि सच्यौ॥
भुज की दिसि वाँम पुंडीर भरी। कटि कंध कबंध गिरंत लरी॥
छं० ॥ ८८२ ॥

कूरंभ अरंभति अप्प अजी। सुधरी कविचंद सुनी सुभनी॥
दल पुट्ठ सुमोरिय राव सुन्यौ। कवि उत्तिन संच सुन्यौ सुभन्यौ॥
छं० ॥ ८८३ ॥

निरवान चंदेलति जुह मिले। इय मुक्कि लरें जम सों जुरले॥
तिन मद्धि सुसंभरि वार इसौ। भुज अर्जुन अर्जुन कार जिसौ॥
छं० ॥ ८८४ ॥

भमरावलि छंद प्रमान कियं। न्रिप जोइ फवज्ज सुबंटि दियं॥
छं० ॥ ८८५ ॥

राजपूत सेना की कुल संख्या और सरदारों की स्फुट अनीकनी सेना की संख्या वर्णन।

दूहा ॥ आप अप्पनी फौज बंठि। नाम ठाम सामंत॥
संख्या दल कविचंद कहि। तिन बल जुद्ध अनंत॥
छं० ॥ ८८६ ॥

भुजंगी॥ सबं सेन साहस्र अस्सी अयग्गं। चवै फौज सांजी जयं जुद्ध जंगं।
सुरं संषि हज्जार सा फौज वामं। पतिं चिच कोटं जयं कत्य कामं॥
छं० ॥ ८८७ ॥

तहां साजि साहाइ साजाम देवं। बलीभद्र कूरंभ सध्ये सुनेवं॥
सुअं धीर पुंडीर पावस्स तध्यं। तहां पारिहारं महन्नं समध्यं॥
छं० ॥ ८८८ ॥

सजी जैत अन्नी सुदाहिन्नि भारं। भरं राज हज्जार इकईस सारं॥

तिन॰ मझ्झ आरज्ज कमधज्ज राजं। अचल्लेस भट्टी सुजादव्व काजं॥
छं० ॥ ८८९ ॥

तहां बंकटी राव पामार धीरं। बडं गुज्जरं चन्द्र सेनं सुबीरं॥
बरं सिंघ पंचाइनं चाहुआनं। धरा भ्रम्म राषै षलं षित्त टानं॥
छं० ॥ ८९० ॥

न्त्रपं देवती लष्यनं धार ईसं। बिजै राज बघ्घेल सुष्यं सजीसं॥
तहां दव्वय परिहार ते जल्ल डोडं। सजै जैत भीरं अरी साल सोढं॥
छं० ॥ ८९१ ॥

मुषं अग्ग सेना सुचामंड राजं। तहां साजि साहस्स सामंत काजं॥
तहां पीप परिहार भारथ्थ रायं। भरं दाहिमा जंगली राव सोयं॥
छं० ॥ ८९२ ॥

रचैं ढंढरी ठांक पुंजं पहारं। भरें भीम चालुक्क बज्जैन सारं॥
तहां राज रावत्त सथ्थें सपेतं। सजे जूह दाहिम्म सा सुम्भनेतं॥
छं० ॥ ८९३ ॥

सजे सेन पुट्ठीय सा चाहुआनं। भरं तथ्य हज्जार उनईस थानं॥
सथं सिंघ पामार पीची प्रसंगं। बड़ं गुज्जरं राम देवं अभंगं॥
छं० ॥ ८९४ ॥

तहां बग्गरीं देव आजान बाहं। गुरू राम देवं सुसथ्थेव ठाहं॥
गुरं चाल गे हिल्ल सो पंच थानं। भरं अन्य सज्जे न्त्रपं ठान ठानं॥
छं० ॥ ८९५ ॥

सजी फौज लष्यै सुदिल्ली नरेसं। चढ़े इष्पनं इम्भ राजं सुरेसं(१)॥
चढे व्योम विम्मान अप्पं अपानं। मिली अच्छरी मंजि रज्जे सुजानं॥
छं० ॥ ८९६ ॥

पिलै नारदं तुंमरं तंति तारं। करे हूह हाकं गुरंगै उछारं॥
मिलै बीर बेताल षेयाल षेतं। मिली चौसठी सक्कत्ति सोयं अनेतं॥
छं० ॥ ८९७ ॥

घनं धप्प गोमाय गिद्धी गंहक्कै। पलं चार श्रोनं चरं दंद हक्कै॥

(१) ए० कृ० को०-नरेसं।

मिलै श्रोनचार लषे मोन भार। अनी जाम बंधी त्रिपत्ती करार॥
छं० ॥ ८९८ ॥

शाही सेना का संतूलपुर के पास आना।

कवित्त ॥ सजि आयौ सुरतान। जूह सेना[1] अति आतुर॥
तुरिय लष्य दह सुभर। दंति दस सहस मंत वर॥
पुर संतुल सा निकट। आय दलबल संपत्तौ॥
सज्यौ देषि दिल्लीस। नाम गोरी अनुरत्तौ॥
पुछ्यौ सुमंत ततार षां। षुरासांन साहाब सदि॥
ठट्टौं सुं सज्जि जंगल सुपह। रचौ बंध अप्पान[2] रदि॥
छं० ॥ ८९९ ॥

शहाबुद्दीन के आज्ञानुसार तत्तारखां का अपनी सेना को व्यू बद्ध करना, शाही सेना के सरदारों के नाम।

पद्धरी ॥ सं बच्यौ तांम तत्तार तंमि। षुरसान षान साहाब समि॥
बंधी सुअनी साजै सुबानि। संहरौ सेन ग्रहि चाहुआन॥
छं० ॥ ९०० ॥

संची सुवत्त सब्बान ताम। बंधी सुअनी पंचौ दुराम॥
दाहिनी सेन सज्यौ ततार। दै लष्य तुरिय सारह सार॥
छं० ॥ ९०१ ॥

दै सहस दंति उनमत्त मंत। संजूह सब्ब बानै अनंत॥
नौ चम्म षान रुम्मी समथ्थ। नारंग निछ्रनि सिंघ हथ्थ॥
छं० ॥ ९०२ ॥

साहाब बंध सुअषान षान। महमुंद षान रुस्तम षान॥
गज गरुअ षान तह षुरेस षान। जे हान षान जंगी जनान॥
छं० ॥ ९०३ ॥

हमियाम षान भै[3] हंस भार। मीरां मसंद षल पित्त ढार॥

(१) ए० कृ० को०—जुद्ध।
(२) ए० कृ० को०—आनंद।
(३) ए० कृ० को०—मैरूं।

काजी कमाल हबसी हुसेन। सादी मलिक अद्दिय अनेन[१]॥
छं० । ९०४ ॥

मालहंन हंस हम्मीर तथ्य। सह संच पंच गष्पर गुरथ्य॥
सज्जे सुसज्ज सेना ततार। बंधी सुअजी भर भीर सार॥
छं० ॥ ९०५ ॥

बांई दिसान षुरसान सज्जि। ईलष्य मीर गरुअत्त गज्जि॥
गज सहस इक्क सारद्द सथ्थ। बाने विरद्द बंबरि बिहथ्थ॥
छं० ॥ ९०६ ॥

ईसण्फ षान आली अषूब। गाजी वषान गर बर हबूब॥
आलील षान दम्माद ईस। सारीर षान सुरतान जीस॥
छं० ॥ ९०७ ॥

पीरोज षान पाहार पीर। अलि असद षान उम्माद मीर॥
महमुंद षान मीरन सुधारि। सारीर षान सेरन सुभारि॥
छं० ॥ ९०८ ॥

ताजंन षान तुरकाम ताम। कम्माल षान गरबर गुराम॥
रोचन्न षान रोहन्न राज। सल्लेम षान सेकंद ताग॥
छं० ॥ ९०९ ॥

महमुंद संद फत्तेन खूब। अबदुल्ल मीर मुलतान जूब॥
साजे रजूह मारूफ षान। साबह नह अनभूल बान।
छं० ॥ ९१० ॥

साहाब सेन परठे सुपुट्ठ। सारद्द लष्य सेना सुदुट्ठ॥
गय सहस गक साजे सुभार। बानैत बान अनभूल सार॥
छं० ॥ ९११ ॥

सथ्थेव साजि, मारूफ मीर। पीरोज षान फत्ते नसीर॥
पीरन्न मीर सेरंन सादि। मरहट्ट मान गाजी मुरादि॥
छं० ॥ ९१२ ॥

कंनर कनक हरचिंद संन। सारंग देव गब्बर सबेन॥

(१) ए० कृ० को०—अंलेन।

उम्माद षान फत्ते फरीद। बंकट्ट राव वामन वरीद ॥
छं० ॥ ९१३ ॥

संचे सपुट्ठि सेना सहाव। परसंसि सूर सब्बान आव ॥
सजि मधय सेन गज्जन नरेस। दै लष्ष मीर साजै सुभेस ॥
छं० ॥ ९१४ ॥

गज सहस चैव मंते उमंत। बंबर बिरद्द बाने बहंत ॥
लालिनं मल्लिक्क गालिब्ब बंध। बाजंत षान गोरी बिरद्ध ॥
छं० ॥ ९१५ ॥

मंगदह राव मरहट्ठ मेह। कोतन अमंन गष्षर अरेह ॥
सनमुष्ष सज्जि मारूफ षान। सुअ गज्जनेस गरुअत्त बान ॥
छं० ॥ ९१६ ॥

चै लष्ष मीर सेना समाजं। दै सहस इम्भ सावद्ध साज ॥
संमन कमंन महमुंदमीर। मों नदी अग्र सेना सधीर ॥
छं० ॥ ९१७ ॥

तोसंन मीर ताजंन षानं। आलोल सैद षांना सुवान ॥
सादीप षान हबसी सलेम। आबूब षान रुम्मी अलेम ॥
छं० ॥ ९१८ ॥

मद्दीय सद्दी मीर बंध। रत्तेव अन्न वक्कंत कंध ॥
सल्लेम षान साकत्त सेष। जा जन्न जमन मीरां विसेष ॥
छं० ॥ ९१९ ॥

सल्लेम सैद सेना सरूप। भोसम्म मीर सुलतान रूप ॥
हाजिय षान न्याजी सताज। अहमद षान पिति पग्ग लाज ॥
छं० ॥ ९२० ॥

साजिय अनीय साहाब पंच। गज बाज बिरद बाने न संच ॥
उम्मरा मीर साजे असंष। को गनै पार अप्पार तंष ॥
छं० ॥ ९२१ ॥

संषैप चंद जंपै समूह[1]। आभूत सेन गोरी गरूह ॥
षट तीय लष्ष संष्या गिनंत। सेना अनंत पयदल मिलंत ॥
छं० ॥ ९२२ ॥

(१) ए० कृ० को०—सतूह।

सर बंधि संधि सोजूह भार। आवरै अंग भर अनिय धार ॥
गज बाज सुदल बल पय पगार। बाजे अनंत बज्जे करार ॥
छं० ॥ ६२३ ॥

जंबूर भूर हथ नारि भार। आतस चरित्त अदभूत पार ॥
बाजंत राग सिंधूर वद्द। धर पूर व्योम नीसान नद्द ॥
छं० ॥ ६२४ ॥

बहु रूप बिरद बाने अनंत। सुरपत्ति विपन रज्ज्यो वसंत ॥
आरोह एक डंमर डरान। लोपंत व्योम सुझ्झै न भान ॥
छं० ॥ ६२५ ॥

सुर बैठि हथ्थ साजे अनंत। धर अतुल चार अड्डुत्त अंत ॥
पल चार श्रोन चर इपि अनंद। हसि हस्सि धीर नच्चैं पसंद ॥
छं० ॥ ६२६ ॥

दुअ सेन साजि राजे रवद्द। ठट्टै सुआय आसुर उरद्द ॥
छं० ॥ ६२७ ॥

श्रावण वदी अमावास्या शनिवार को दोनों सेनाओंका मुकाबला होना।

दूहा ॥ साक सु विक्रम रुद्र सौ[1]। अट्ठ अग्र पंचास ॥
सनि वासर संक्रांति क्रक[2]। श्रावन अड्डो मास ॥
छं० ॥ ६२८ ॥

सावन मावसि सूर सुअ। उभय घटी उदयत्त ॥
प्रथम रोस दोउ दीन दल। मिलन सुभर रन रत्त ॥
छं० ॥ ६२९ ॥

दरसे दल बद्दल विषम। रागरुलाग निसान ॥
मिले पुब्ब पच्छिमह तें। चाहुआन सुलतान ॥
छं० ॥ ६३० ॥

सारन धीरी सारुहै। धीर न धरी प्रमान ॥
चाहुआन गोरी सरिस। गोरी रा चहुआन ॥
छं० ॥ ६३१ ॥

(१) ए० को० को०—सत्त सौं। (२) मो० क्रम।

बड़ी लड़ाई का संक्षेप (खुलासा) वर्णन ।

भुजंगी॥ मिले चाय चौहान सुलतान षग्गं । मनो वारुनी छक्कि वै वारु लग्गं
उठे हथ्थ हक्कं कहं कूहकालं । जुटे जोधं जोद्धं तुटै ताल तालं ॥
छं० ॥ ९३२ ॥

भए सेल मेलं दुहुं लार मारं । बढ़ी संग लग्गी वजी धार धारं॥
सुभहं सुथट्टं सुरीसं समेकं । भई सेलमेलं अनी एक एकं ॥
छं० ॥ ९३३॥

परें घाइ अघ्घाइ केकेन सुद्धं । कटैं अद्ध अद्धं कमद्धं कमद्धं ॥
परै सूर सझ्झं उतंगं सुभारं । भ्रमै व्योम विम्मान आरंभ हारं॥
छं० ॥ ९३४ ॥

छुट्टे बान चहुआन आवद्ध राजं । लगे मेछ अंगं मनों वज्र बाजं
फुटै संगि संनाह के अंग अंगं। उठै श्रोन छिंछे जरैं आनि दंगं॥
छं० ॥ ९३५ ॥

इतं राज प्रथिराज सामंत सेतं । भए मेळ अद्धे मनों राह केतं ॥
बक्यो बीर नन्दी सुसूली अनन्दी । नचै भूत भैरूं बके जानि बंदी
छं० ॥ ९३६ ॥

भिरें जुद्ध जानीय जुथ्थानि जुथ्थं ।ग्रहै गिद्धि सेवाल लुथ्थानि लुथ्थं
चुवै श्रोन सट्ठी किलक्कंत घुंटै । ग्रंह मेछ लागें जुरै सूर छुट्टै ॥
छं० ॥ ९३७ ॥

भिरै जाम दुअ जुद्ध हिंदू सुमीरं । परें पंच पंचास चावंड बीरं॥
परे दाहिमा बग्गरी हक्कि दूने । परे देवरा जेद्ध ते दून ऊने ॥
छं० ॥ ९३८ ॥

परे सांषुलो सब्ब भाटी सुराने। परे हंस मालह्न मिलि हंस थाने॥
परे राइ रट्ठौर रनभूमि ठोरे । मनों सार संसार रन साभि छोरे॥
छं० ॥ ९३९ ॥

परे चाइ चालुक्क ते सार दूने। मुरे मोरिया सव भए जाति सूने॥
परे सहस षट सूर कूरंभ वाला। [1] परै गज्ज सिंदू कते ढालढाला॥
छं० ॥ ९४० ॥

[१] मो०—" फिरै गज्ज सिंदूक ठाळेति ठाला"

परे षीचिया षग्ग षेलै सुषाला । परें टांक चंदेल पुंडीर माला ॥
सहै भीर रन रंग ते तुंग लाला । चले ब्रह्महंसं षुले मुत्तिमाला ॥
छं० ॥ ९४१ ॥

परै जैत पम्मार आबु सुराया। करी अप्प चहुआन प्रथिराज छाया॥
परे पंच से पंच चहुआंन बट्टे। रहे सत्त सर सत्त प्रथिराज ठट्टे[१]॥
छं० ॥ ९४२ ।

परे सहस पच्चीस सब्ब सेन गोरी । रहै तुरक हिंदू मनों षेलिहोरी ॥
भिरे दैव दानव्व जिम बैरू बित्यौ।मुरयौ सेन चहुआन सुरतान जित्यौ ॥
छं० ॥ ९४३ ॥

परे लष्षि अगिन्नंत जानो न संख्या।रची जानि जोगिंद सा मुंनि दृष्या॥
मिले षान सुरतान रनभूमि पिष्यौ । तहां एक देवांस में देव दिष्यौ ॥
छं० ॥ ९४४ ॥

परी बिटं राजंग सा अंग मीरं । करी कुंडली काल रच्यौ कठीरं ।
कथे कथ्य कुब्बेर सांई सु अग्गे । चितं अत्ति आनंद उभ्भास लग्गे ॥
छं० ॥ ९४५ ॥

देवी जालपा, वीरभद्र, सुवेर यक्ष और योगिनियों का शिवजी के पास जाना ।

कवित्त । तांम ठांम ज लष्प । जाय जटधार सपत्तौ ॥
आहुत्तौ बलिभद्र । बीर बीराधि सहित्तौ ॥
आति आदर द्विय देवि । पुच्छि परपंच संच विधि ॥
बर आसन उत्थान । मान रष्षिय सु प्रान उधि ॥
आयौ सु अच्छि सुबैर तहं । संग जोगिनि बेताल साथ ॥
बीतौ सु जुद्ध हिंदू तुरक । कहिय ईस दिय भेट अथि ।
छं० ॥ ९४६ ॥

महादेवजी का पूछना कि हिन्दू मुसलमान के युद्ध का हाल कहो ।

तब कहै ईसमंन मंडि । अहो[२] सुब्बेर दच्छ सुनि ॥

[१] ए० कृ० को०—बैट्टे । (२) मो०—अहो सु बेर द्रव्य सुनि ।

किम हिंदू तुरकानि । पान[1] जंपौ जुद्ध गुनि ॥
दुहै जोग सारत्त । मंतं दिष्यौं जुध जग्गिय ॥
दुहै वीर उनमद[2] । साषि भष्षी सा अग्गिय ॥
बलिभद्र कहिय अति उद्ध कथ । रूद्र सूर सामंत रन ॥
भारथ्य कथ्थ लग्गौ अतुल । कहौं पान उंभ्भन तन ॥
छं० ॥ ९४७ ॥

सुबेर यक्ष का कहना कि प्रथम युद्ध के पहिले राव बलिभद्र और जामराय यादव का रावलजी से नीति धर्म पूछना और रावलजी का नीति कहना।

दूहा। कहिय दच्छ कैलासपति । सुनि रन संकुल सार ॥
चाहुआन सुरतान षिति । जे भर जुट्टे धार ॥
छं० ॥ ९४८ ॥

कहै सूर सामंत सह । जस जीतन यों काज ॥
जो जीतन तुम होय नहि । तौ रष्षहु प्रथिराज ॥
छं० ॥ ९४९ ॥

प्रथम जुद्ध आवृत्त मचि । कर थक्के दोउ दीन ॥
औसरि दल दूनौं रहै । ज्यों प्रमुदा रस भीन ॥ छं० ॥ ९५० ॥
मिले सूर सामंत मत । पति चित्रंगे पुच्छि ॥
तुम माया मद जित्त हौ । हम मानव मन तुच्छ ॥ छं० ॥ ९५१ ॥

बलभद्र और जामराय का रावलजी प्रति प्रश्न।

कवित्त। विपथ राव बलिभद्र । सुपथ जादौं पति कथ्थिय ॥
समरसिंघ रावलह । समर साहस गति पिथ्थिय ॥
राज ध्रम्म व्रत ध्रम्म । ध्रम्म छत्री सालोकिय ॥
कह सु हंस आनंद । बुद्धि कहि तत्त सलोकिय ॥
दाहं कहां सु मोह मरयाद कह । कहां सुनीति जोतिहि रहै ॥
जोगिंदराव जगहथ्थ तुम्ह । जग सुद्देव तत्तह कहै ॥
छं० ॥ ९५२ ॥

(१) मो०—पात। (२) मो०—उदमद।

रावल जी का उत्तर देना।

विपथ सुबंधयौ मोह। सुपथ जिहि स्वामी निवरतै ॥
राज सु अग्गा रवन। सेव तिन वज्ज प्रवत्तै ॥
भ्रित सु स्वामि सोरत्त[१]। नीय निंदा न प्रगासिय।
अह निस बंछहि मरन। सु पहु संकुरै निवासिय ॥
हा हंस हंस मंडल रुरै। मन अनंत अंतहि रुरत ॥
सामंत सिंघ रावर चवै। सुगति मुगति लभ्भै तुरत ॥

छं० ॥ ९५३॥

प्रश्न "क्षत्रियों का धर्म क्या है और सायुज्य मुक्ति किसे कहते हैं।"

कहै राव जामानि। अहो चिचंग राव सुनि ॥
तुमं सु जोग जोगिंद। जोगधर मूल ब्रम्ह गुनि ॥
तुम सुधीर अवधूत। व्यास जिम लहौ सकल गति ॥
तुम सुझ्झै चयलोक। सकल कल कलथ तुम्झ मति ॥
हम कहौ धम्म छचिय सुधर। राज भ्रंम भत भ्रंम ॥
सालोक साज सज्जौं प्रथक। कहौ मुत्ति[२] सारूप भर ॥

छं० ॥ ९५४ ॥

रावल जी का बचन कि धर्मरहित मायालिप्त पुरुष नरकगामी होते हैं।

तब कहि रावर सिंघ। सुनहि जामानि राज बर ॥
भल पुच्छिय भर समथ। सार संसार कला धर ॥
कहिय पुराननि बत्त। रिष्य आगम बहु बिथ्थरि ॥
कपिल गाय कह्यौ अरथ। कहिय पारथ ग्यान सु हरि ॥
इन काल द्रष्ट द्रुय चित्त निज। मुष अग्गै आसुर सयन ॥
संषेप कहौं तुम तत्त मत। मझ्झ गहि राषौ सुमन ॥

छं० ॥ ९५५ ॥

काल तिमिर पर वर्यौ। चिंति तिहि भ्रंम न बुझ्झै ॥

(१) ए० कृ० को०—सौरत्त ॥ [२] ए० कृ० को०—मुत्ति ॥

अंतकाल मुष अद्ध। ग्यान चंय कालह सुभ्भै ॥
जनम भयैं भयौ मूढ़। राति चैकालै[1] पलट्टै॥
निंद मद्द धन काम। धाम आवरदा घट्टै।
बंधनह अप्प अ रमुष्ष किय। गज्जु जेम उनमद फिरै ॥
रिधिजात जंत दिष्षो नयन। नहि अचिज्ज नरकहि[2] पिरै ॥
छं० ॥ ९५६ ॥

प्रश्न क्षत्री भव पार कैसे हो सकता है।

दूहा। [3]कहैं राइ जामानि तब। किम्मि भव तरियै पार॥
कहौ राइ जोगिंद तुम। गुरमति चिभुवन सार ॥
छं० ॥ ९५७ ॥

रावलजी का बचन-क्षत्री धर्म्म और सालोक मुक्ति कथन।

कवित्त। जाग्रति सुषपति सुपन। तुरिय अवस्था ये च्यारहि॥
ता मध्ये वय ग्रहै। लहै सद असद सु सारहि ॥
मात पित्त मानै सुदेव। देवकरि आवध मानै ॥
स्वामि धम्म आचरै। दुष्ट क्रित धरै न कामै॥
समपै सुक्रम सह हरि सहस। अगम गंम पायन धरै ॥
सुष दुष्ष स्वामि निज सुहरै। इम पंची पारंह तिरै ॥
छं० ॥ ९५८ ॥

बेद[4] नीति धर चलै। स्वामि धम्मह नन चुक्कै ॥
जोग विद्ध जोगवै। अप्प हरि ध्यान न मुक्कै ॥
सबद जोति रहै लीन। धम्म क्रत वासुर कम्मै ॥
जुद्ध काल संपत्त। आय अरि पुत्तह अम्मै ॥
संकलपि सीस सांई सरिस। मनह निरंजन जोति द्रग ॥
मधि रचै सूर बिंबह सुमन। एह मुगति[5] सारूप मग ॥
छं० ॥ ९५९ ॥

(१) ए० कृ० को०—चैकह (२) ए० कृ० को०—नरकह पैरे।
(३) ए० कृ० को०—"कहौ राय जोगिंद गुर, तुम मत त्रभुवन सार।
(४) को०—देव। (५) मो०—मुकति।

पियै सगति धर श्रोन । पिंड पावक आहारै ॥
संड समप्पै प्रान । सीस उर शंकर धारै ॥
अंत तुट्टि पय चंपहि । डिंभ लग्गहि सृग गिद्धिय ॥
जय बंछै निज स्वामि । लगै ताली मन बद्धिय ॥
मंडलह हंस हंसह जुरै । जीय जोग गति उद्धरै ।
निरकार ध्यान राषै जु निज । इम भव श्रारूपह तिरै ॥
छं० ॥ ६६० ॥

नृबैर भूत भव सकल । अकल आनंद कलन मन ॥
काम क्रोध मद रहित । अहित छित चित्त ग्रेह तन ॥
निंदा अस्तुति समति । रमति स्वामित्त समर रन ॥
लज्जा धर कर बज्र । अङ्ग वज्रंग अरिन गन ॥
जंप्पौ सुयम जामानि जद । अनहद सद सत्ता मवन ॥
जानंत विदुष मति सकल तुम । बहुत बात जंपत कवन ॥
छं० ॥ ६६१ ॥

प्रश्न-राजनीति का क्या लक्षण है।

दूहा ॥ राजनीति पुच्छियं सुफरि । जद्दव जाम सुभाइ ॥
किम छत्री भव उत्तरै । जंपि समर न्रप राइ ॥ छं० ॥ ६६२ ॥

रावल जी का बचन-राजनीति वर्णन।

पद्धरी ॥ भव पार तार उद्धार बात । सुनि कहीं जद्द जामानि तात[1] ॥
रजनीति विद्ध पहिलै सुध्रम्म । मालीय काम त्यों[2] न्रपति क्रम्म ॥
छं० ॥ ६६३ ॥

लटि गये मूर तर जरनि हीन। तिन पोषि पानि फुनि पुष्टि कीन ॥
तिम करै दुहित ते हीन पुष्टि । मनसा प्रसन्न सद रहै तुष्टि ॥
छं० ॥ ६६४ ॥

फल फूल डार सुनि लेइ कच्छि । न्रप सचिय करषि कर हरै लच्छि ॥
नहि लेइ माल न्रप करि उपाइ । सरिजाइ सुफल त्यों लच्छि जाइ ॥
छं० ॥ ६६५ ॥

(१) कृ० ए०—बात, मो०जात ।
(२) ए० कृ० को०—ज्यौं ।

सिरज्ञोर सीस सचित्र जौ होइ। होइ साष भेद बिपरीत कोइ ॥
ज्यों कौन पातवै रोचनेव। नृप सावधान मन रहै तेव ॥
छं० ॥ ९६६ ॥

लघु बद्धि हछि ज्यों करि उतंग। त्यों हीन नरनि[1] नृप धारै चंग ॥
हुअ बंक डार जे बलहि भूलि। तिन छंटि छुटि बढ्ढवै स्थूल ॥
छं० ॥ ९६७ ॥

जे अत्त राज मग्ने न पंक। तिन जर उपारि कट्टै सुवंक ॥
बंबूर बारि ज्यों बाग होइ। कंटकनि बंक भट रषिष जोइ ॥
छं० ॥ ९६८ ॥

जे धरा काज धरधरै धाइ। अंकुस गयंद त्यों जोर जाइ ॥
वर जोर सचिव बधकर अषान। द्रिष्टतव[2] सरथ ज्यों दुगध पान ॥
छं० ॥ ९६९ ॥

परधान चौथ नृप जोर जाहि। धर जात बेर लग्गै न ताहि ॥
[3]सेवकिनी पत्नि जित रांमै नाह। विलसै ससचिव लै लच्छि लाह ॥
छं० ॥ ९७० ॥

दूहा ॥ इह जामानी कथ्य कथि। कहि संषेपिय उद्ध ॥
सजौ जूह सज जुद्ध भर। सनमुष अरि बेनु युद्ध[4] ॥
छं० ॥ ९७१ ॥

रावलजी का सब राजपूत योद्धाओं को समझना और सब का रणोन्मत हो का युद्ध के लिये उद्यत होना।

पद्धरी। संबोधि सुभट षुम्मान राइ। आभासि सबै अप्पा सुभाइ[5] ॥
सामंत सीह अरसिंह बोलि। जैतसी लषमन लष्ष ओलि ॥
छं० ॥ ९७२ ॥

साजंन सीह सदि लषम सीह[6]। सत स्याम सीह[6] रतन अबीह ॥
तेजसी राव कुंडल करंन। देवरा देव न्त्रिभ्भै सरन्न ॥
छं० ॥ ९७३ ॥

---

(१) ए० कृ० को०—जनानि। (२) ए० कृ० को०—दुष्टंत।
(३) ए० कृ० को०—ज्यों सव किनी पत्त जिम रमै नाह।
(४) ए० कृ० को०—वे बुद्ध। (५) ए० कृ० को०—राइ (६) ए० कृ० को०—बामंनसिंह।